मूल्य : 20/-

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17

वर्ष : ३

जुलाई २०१८, विक्रमी सम्वत् २०७५
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११९ दयानन्दाब्द १९५

अंक : १

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्॥

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

मंगल पांडे
जयंती : 19 जुलाई

चंद्र शेखर आजाद
जयंती : 23 जुलाई

बाल गंगाधर तिलक
जयंती : 23 जुलाई

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

गुरुकुल नोएडा में पधारे महान योगी स्वामी कर्मवीर जी महाराज के साथ गुरुकुल व आर्यसमाज के पदाधिकारीगण, आचार्यगण एवं ब्रह्मचारी।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : ज्योतिष विद्या का...	2
2.	शिक्षण व्रत में विद्या और कला	3
3.	यः प्राणतो निमिषतः	4-5
4.	मनु स्मृति और धर्म	6-7
5.	ईश्वर : पूजा क्यों व कैसे करें	8-9
6.	शिक्षण : एक व्रत	10
7.	अनुशासनम्	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	कारगिल विजय दिवस	14
10.	जीवात्मा का अनादित्व एवं...	18
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : आम की पत्तियां	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा- 201301 गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।। ओ३म् ।।

ज्योतिष विद्या का दुरुपयोग रुकना चाहिए

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में फलित ज्योतिष के कुपरिणामों से सावधान किया है। महर्षि ने लिखा है कि जब किसी के घर में बच्चा पैदा होता है, सब बहुत प्रसन्न होते हैं किंतु जब तथाकथित पंडित घर में आते जन्म का समय पूछकर ग्रह नक्षत्रों की उल्टी-सीधी गिनती करके रंग-बिरंगी जन्मपत्री बनाते हैं और घरवालों को समझाते हैं कि इस कुंडली में दोष है जिसको सुनकर समस्त पारिवारिकजन शोकग्रस्त हो जाते हैं। इसलिए ऋषि ने कहा कि यह जन्मपत्री नहीं शोकपत्री है। ज्योतिष के नाम पर अरबों-खरबों का खेल भारत में विशेष रूप से होता है। आप प्रात:काल टीवी खोलकर देखिए तो प्राय: सभी न्यूज चैनलों पर ज्योतिषी बैठे रहते हैं, जो सबको राशिफल बताते हैं।

मैं अपने सुधी पाठकों को बताना चाहता हूं कि कृपया विचार करके देखिए कि वास्तव में ही राशियों का कोई फल होता है? यदि होता तो कृष्ण और कंस की एक ही राशि है। राम और रावण की भी एक ही राशि है। किंतु एक विजेता बनता है दूसरा मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी से समझ में आ जाता है कि यह बात सफेद झूठ है।

किसी की मृत्यु पञ्चक में हो जाती है तो पंडित उनको डराते हैं और यह कहते हैं कि यदि आपने विशेष पूजा-पाठ नहीं कराया तो आपके घर में पांच लोगों की मृत्यु होगी। इस प्रकार मृत्यु का भय दिखाकर पीड़ित परिवार से लाखों रुपये लूट लेते हैं। सुधी पाठकों- जन्म-मृत्यु की व्यवस्था नितांत ही परमात्मा के अधीन है। यदि इसको बदला जा सकता तो ज्योतिषी अपने घरवालों की मृत्यु को रोक देते, मृत्यु व्यवस्था सबके लिए है। ईश्वरीय व्यवस्था है-मृत्यु से भय दिखाकर ठगने वाला तो पापी ही होता है। जो ठगा जाता है वह भी मूर्ख होता है। मांगलिक दोष का प्रकोप- मांगलिक होना आजकल सबसे बड़ा अभिशाप बना दिया है। इस दोष के कारण लाखों युवतियों के विवाह में अड़चन आती है तथा बहुतों का जीवन बर्बाद हो रहा है। इससे बचने के उपाय बताये जाते हैं वो भी अत्यंत हास्यास्पद है। जैसे कुत्ते से विवाह कराना, पेड़ से विवाह कराना, पढ़े-लिखे पैसे वाले लोग इनके नाम से ज्यादा कमाते हैं तथा समाज में गलत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

जरा विचार कीजिए सभी तत्व एवं ग्रह जड़ है। जड़ पदार्थ अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकते, फिर ये मंगल हमारा क्या करेगा। मैं आपको बताऊं मंगल हमारा कुछ नहीं कर सकता, किंतु ये पंडित हमारा सत्यानाश अवश्य कर देंगे, अतएव इनसे बचने का प्रयास कीजिए, इनके बहकावे में बिल्कुल न आयें।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

जन्म-मृत्यु की व्यवस्था नितांत ही परमात्मा के अधीन है। यदि इसको बदला जा सकता तो ज्योतिषी अपने घरवालों की मृत्यु को रोक देते, मृत्यु व्यवस्था सबके लिए है। ईश्वरीय व्यवस्था है-मृत्यु से भय दिखाकर ठगने वाला तो पापी ही होता है। जो ठगा जाता है वह भी मूर्ख होता है। मांगलिक दोष का प्रकोप- मांगलिक होना आजकल सबसे बड़ा अभिशाप बना दिया है। इस दोष के कारण लाखों युवतियों के विवाह में अड़चन आती है तथा बहुतों का जीवन बर्बाद हो रहा है। इससे बचने के उपाय बताये जाते हैं वो भी अत्यंत हास्यास्पद है। जैसे कुत्ते से विवाह कराना, पेड़ से विवाह कराना, पढ़े-लिखे पैसे वाले लोग इनके नाम से ज्यादा कमाते हैं तथा समाज में गलत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जरा विचार कीजिए सभी तत्व एवं ग्रह जड़ है। जड़ पदार्थ अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकते, फिर ये मंगल हमारा क्या करेगा। मैं आपको बताऊं मंगल हमारा कुछ नहीं कर सकता, कितु ये पंडित हमारा सत्यानाश अवश्य कर देंगे, अतएव इनसे बचने का प्रयास कीजिए, इनके बहकावे में बिल्कुल न आयें।

शिक्षण व्रत में विद्या और कला

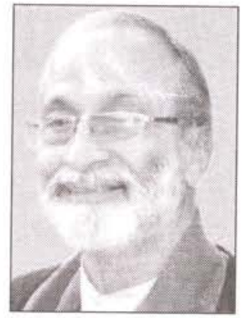

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

शिक्षण में विद्या और कला इन दोनों की उपासना अभिप्रेत है। दोनों प्राप्त कराने का काम शिक्षण का है। जो उन्नत जीवन का बोध कराने वाली है वह है 'विद्या', और भौतिक जीवन स्थिर कराने वाली है वह है 'कला' या फिर वैज्ञानिक अनुसंधान के मुताबिक "Left Brain vs Right Brain" - Left brain यानी verbal, mathematical, analytical इत्यादि और Right brain यानी Visual, Artistic, Emotions इत्यादि। गीता भी तो वही कहती है, 'बुधा भाव समन्विता:'।

विद्या के बिना कला अंधी है, और कला के बिना विद्या पंगु! विद्या यदि कला को आत्मसात् न कर सके, तो कला विद्या को ग्रस लेती है, जन सामान्य में से विद्या लुप्त हो जाती है। समझदार इंसान से जैसे ज्यादा सहनशीलता और जिम्मेदारी की अपेक्षा होती है, वैसे ही विद्या और कला में से, विद्या से जिम्मेदारी की अपेक्षा ज्यादा है।

बालकों को विद्या मिलनी चाहिए और ऐसे विद्यावान लोगों की कला को आत्मसात् करना चाहिए अन्यथा केवल कलाओं में पारंगत लोग, समाज में से विद्या को Unproductive, Non-Pragmatic बताकर नष्ट:प्राय कर देंगे। अर्थात् यह बहुत जरूरी है कि शिक्षण से विद्या और कला दोनों का पोषण बच्चों को मिले। इन दोनों के बीच न्यूनता-गुरुता का प्रश्न ही नहीं। गुणसंवर्धन और जीवन विकास के लिए, ये दोनों उतने ही उपयुक्त है।

पर सामान्यत: होता यह है कि विद्याधाम कला की उपेक्षा करते हैं, और कला के उपासक विद्या की। परिणामत: कलाधाम Factories बन जाती हैं, और विद्याधाम Eutopic विश्व। कई विचारक यह भी मानते हैं कि कला और विद्या के धाम अलग अलग होने चाहिए, पर यह तो Secularism जैसी बात हो गयी कि धर्म अपने रास्ते और शासन अपने! कला तो विद्या को कार्यान्वित करने का श्रेष्ठ और सरल क्षेत्र है। कला के साथ विद्या का समन्वय और संयोग करने का शिक्षण, भेदवादी पद्धति से कैसे मिल सकता है? विद्या और कला के सुप्रमाण संयोजन के बिना संस्कृति टिक नहीं सकती।

तत्वज्ञान को अभ्यासक्रम में Formally स्थान देने के विषय में भी अलग से सोचना उपयुक्त होगा। हालांकि तत्वज्ञान पढ़ाना तब सार्थक होगा अगर शिक्षण का स्वरूप सुविचारी हो।

विद्या यदि कला को आत्मसात् न कर सके, तो कला विद्या को ग्रस लेती है, जन सामान्य में से विद्या लुप्त हो जाती है। समझदार इंसान से जैसे ज्यादा सहनशीलता और जिम्मेदारी की अपेक्षा होती है, वैसे ही विद्या और कला में से, विद्या से जिम्मेदारी की अपेक्षा ज्यादा है। बालकों को विद्या मिलनी चाहिए, और ऐसे विद्यावान लोगों की कला को आत्मसात् करना चाहिए । अन्यथा केवल कलाओं में पारंगत लोग, समाज में से विद्या को Unproductive, Non-Pragmatic बताकर नष्ट:प्राय कर देंगे। अर्थात् यह बहुत जरूरी है कि शिक्षण से विद्या और कला दोनों का पोषण बच्चों को मिले। इन दोनों के बीच न्यूनता-गुरुता का प्रश्न ही नहीं। गुणसंवर्धन और जीवन विकास के लिए, ये दोनों उतने ही उपयुक्त है।

आवश्यक सूचना

हमारी जानकारी में आया है कि कुछ सदस्यों को मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' प्राप्त नहीं हो रही है, जिसका हमें खेद है। जबकि नोएडा पोस्ट ऑफिस से यह सुनिश्चित किया जाता है कि पत्रिका समयानुसार प्रेषित हो। पत्रिका समय पर न पहुंचने पर आप कृपया कार्यालय को सूचित करें ताकि तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

■ व्यवस्थापक

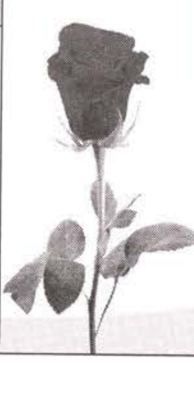

!! बधाई !!

हमारे पत्रिका के व्यवस्थापक श्री ओमकार शास्त्री 22 जून-2018 को विवाह के पवित्र बंधन में बन्ध गए। परमपिता परमात्मा की वर-वधू पर असीम कृपा हो और उनका वैवाहिक जीवन सुख, शांति और समृद्धि से परिपूर्ण हो।

■ प्रबंध संपादक

यः प्राणतो निमिषतः

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के चौथे मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

(गतांक से आगे...)

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

प्रभु शासन भी करते हैं, सबको उनके कर्मों का फल भगवान् देते हैं। एक प्यारे गीत के एक दो पद देखिए-

'मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जैसी कोई करनी करता, वैसा ही फल पाता।।
नहीं चले उसके घर, रिश्वत और चालाकी।
उसकी लेन-देन की बंदे, रीति बड़ी है बॉकी। पुण्य का बेड़ा पार करे वह, पाप की नाव डुबाता।।
बड़े कड़े कानून प्रभु के, बड़ी कड़ी मर्यादा। किसी को कौड़ी कम नहीं देता, न ही किसी को ज्यादा।
इसीलिए तो दुनिया का वह, जगत् पिता कहलाता।।

जगत् पिता है, सबका पालन करता है, किंतु प्रभु न्यायकारी है। पुण्य के बदले सुख और पाप के बदले दुख मिलता ही है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'- शुभ और अशुभ कर्मों का फल तो अवश्य ही भोगना पड़ता है।

परमैश्वर्यवान् प्रभु पालक भी हैं और शासक भी। जन्म से मृत्यु पर्यंत पालन की सारी व्यवस्था प्रभु करते हैं। विलास की निरर्थक पाप प्रेरक वस्तुएं महंगी हैं, किंतु जीवन की आवश्यक अमूल्य वस्तुएं बिना मूल्य के प्रभु ने दे रखी है। 'प्राण' सबसे अधिक आवश्यक है। प्राणों के बिना तो मनुष्य कुछ क्षण भी कठिनाई से जीवन धारण कर सकेगा। वे प्राण बिना मूल्य के और वह भी पर्याप्त से कहीं अधिक।

मनुष्य प्राण ग्रहण करने की क्षमता खो बैठे, यह अलग बात है। प्रभु ने तो भरपूर प्राण दिये हैं, प्रभु पालक हैं। जगदीश्वर शासक भी हैं, पापों का दण्ड भी देते हैं। कई बार मनुष्य अपनी दार्शनिक सोच को स्वार्थ से बांध देता है। उसकी तर्कबुद्धि कुंठित हो जाती है, अथवा मनुष्य अपनी तर्क बुद्धि को कुंठित कर लेता है। भक्तों ने पाप क्षमा के अनेक रास्ते निकाल लिए हैं। कहते हैं-

'गंगागंगेति यो ब्रूयात् योजनां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।'

सैकड़ों योजनों से गंगा-गंगा बोलने से ही पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक बैकुण्ठ को चला जाता है।

ऐसे दर्जनों श्लोकपद भरे पड़े हैं जो पाप को क्षमा कर देने की सिफारिश करते रहते हैं। किंतु शास्त्रीय स्थिति पाप क्षमा की नहीं है।

श्रीकृष्ण की सम्मति : श्रीमद्भगवद् गीता में एक प्रसंग है कि परमेश्वर किसी भी कर्ता का पाप या पुण्य नहीं लेते। मनुष्य अज्ञान से मोहित हो जाता है तो ऐसा सोचने लगता है कि प्रभु हमारा पाप हमसे ले लेंगे और पुण्य हमें प्रदान कर देंगे। ईश्वर की प्रार्थना उपासना से पाप नष्ट नहीं होते। निम्नलिखित श्लोक पर विचार कीजिए-

'नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।।

(गीता ५-१५)

अर्थात्- विभु (परमेश्वर) न किसी का पाप ग्रहण करते हैं और न किसी भी का सुकृत-पुण्य ही लेते हैं। जब मनुष्य का ज्ञान अज्ञान से आच्छादित हो जाता है, ज्ञान पर अज्ञान का परदा पड़ जाता है, तब वह मोह में पड़कर ऐसा सोचता है कि भगवान मेरा पाप क्षमा कर देंगे या मुझे पुण्य दे देंगे। प्रभु न्यायकारी है, जीव को अपने कर्मों के अनुसार न्याय मिलता है। प्रभु ऐश्वर्यशाली हैं, वे मनुष्य को ऐश्वर्य पाने का अवसर भी देते हैं। यह मनुष्य का अपना काम है कि वह ऐश्वर्य प्राप्त करले या उसे छोड़ दे।

ऐश्वर्य धन का हो या बल का या फिर विद्या का भी ऐश्वर्य हो, यह ऐश्वर्य

जगत् पिता है, सबका पालन करता है, किंतु प्रभु न्यायकारी हैं। पुण्य के बदले सुख और पाप के बदले दुख मिलता ही है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'- शुभ और अशुभ कर्मों का फल तो अवश्य ही भोगना पड़ता है। परमैश्वर्यवान् प्रभु पालक भी हैं और शासक भी। जन्म से मृत्यु पर्यंत पालन की सारी व्यवस्था प्रभु करते हैं। विलास की निरर्थक पाप प्रेरक वस्तुएं महंगी हैं, किंतु जीवन की आवश्यक अमूल्य वस्तुएं बिना मूल्य के प्रभु ने दे रखी है। 'प्राण' सबसे अधिक आवश्यक है। प्राणों के बिना तो मनुष्य कुछ क्षण भी कठिनाई से जीवन धारण कर सकेगा। वे प्राण बिना मूल्य के और वह भी पर्याप्त से कहीं अधिक। मनुष्य प्राण ग्रहण करने की क्षमता खो बैठे, यह अलग बात है। प्रभु ने तो भरपूर प्राण दिये हैं, प्रभु पालक हैं। जगदीश्वर शासक भी हैं, पापों का दण्ड भी देते हैं। कई बार मनुष्य अपनी दार्शनिक सोच को स्वार्थ से बांध देता है। उसकी तर्कबुद्धि कुंठित हो जाती है, अथवा मनुष्य अपनी तर्क बुद्धि को कुंठित कर लेता है। भक्तों ने पाप क्षमा के अनेक रास्ते निकाल लिए हैं। कहते हैं- 'गंगागंगेति यो ब्रूयात् योजनां शतैरपि। मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोक स गच्छति।।' सैकड़ों योजनों से गंगा-गंगा बोलने से ही पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक बैकुण्ठ को चला जाता है। ऐसे दर्जनों श्लोकपद भरे पड़े हैं जो पाप को क्षमा कर देने की सिफारिश करते रहते हैं। किंतु शास्त्रीय स्थिति पाप क्षमा की नहीं है।

तो दान करने से ही मिलता है, संचय करने से नहीं-

'यद् ददाति यदश्नाति, तदेव धनिनोधनम्। अन्ये मृतस्य क्रीड़न्ति, दानैरपि धनैरपि।।'

जो किसी को दे दिया, जिस धन बल और विद्या से किसी की सेवा सहायता कर दी, वह अपने लिए संचित हो गया, प्रभु के बैंक में जमा हो गया। धनी का धन तो वही है जो अपने या अन्य के कार्य आ गया। अन्यथा धनी की मृत्यु के पश्चात् दूसरे लोग उसके धन के साथ खेल खेलते हैं- खिलवाड़ करते हैं। प्रभु के न्याय का आश्रय ही परम सहारा है।

कस्मै देवाय हविषा विधेम : सकल ऐश्वर्य के देने वाले, सुख-स्वरूप परमेश्वर के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री अर्पित करके भक्ति करें।

प्राय: देखा जाता है कि यज्ञ याग, दान-दक्षिणा इत्यादि में दी जाने वाली, अर्पित की जाने वाली वस्तुएं घटिया स्तर की रहती हैं। बाजारों में पूजा के बर्तन, ब्राह्मणों को दिये जाने वाले वस्त्र पात्र अजीब प्रकार के होते हैं। पौराणिकों में तो कहावत ही है 'दान की बछिया का दांत नहीं देखते।' देने वाला खाना पूर्ति करता है और कई ब्राह्मण-महापात्र-मंदिरों के पुजारी आदि वैसे का वैसा ही दुकानदार को बेच देते हैं। दुकानदार फिर किसी दाता को बेच देते है। कहते भी हैं 'भाव के भूखे हैं भगवान्।' ऐसा जान पड़ता है कि भगवान् उनके भावों की चालाकी, दाता की कंजूसी नहीं समझते।

कई अवसरों पर तीर्थों में दुग्धदान की प्रथा है। दान दाता अपना दूध कम लाता है। प्राय: दुग्धदान में पंडिताई करने वाला ब्राह्मण ही दूध का लोटा घर से भरकर ले आता है। भक्तगण दुग्धदान करते हैं। ब्राह्मण की दक्षिणा और दूध का दाम दोनों ब्राह्मणों को मिलता है। दुग्धदान से लोटा जितना खाली होता जाता है उतना ही पानी मिलाकर दुग्धदान कराने वाला लोटा को भरता रहता है। घंटों, शायद सारे दिन दुग्धदान ही होता रहता है और पुजारी का लोटा भी भरा का भरा ही रहता है।

कई बार यज्ञों में टीने की पेंदी का घी रख लेते हैं। अच्छा घी खाने के लिए और तलछट लाल, मटमैला, काला घी हवन के लिए। यह सब हमारी हीन मनोवृति या भोलेपन का फल है। ऋषि केसर कस्तूरी सुगंध युक्त अच्छे शुद्ध घी की आहुतियां देने को लिखते हैं। कस्तूरी तो अब दुर्लभ है और केसर भी बहुत महंगी। कम से कम शुद्ध गोघृत का तो हम प्रयोग करें। कई बार अति बाबू टाइप लोग वनस्पति तेलों को घी समझते हैं। यज्ञ के लिए तो शुद्ध गोघृत ही चाहिए। कम से कम पशुदुग्ध से बना हुआ घी तो हो ही।

स्वामी दयानन्द जी ने देवाय का अर्थ सकल ऐश्वर्य का देने वाला परमेश्वर किया है। 'देवो दानात्' देव दान से ही देव बनते हैं। परमेश्वर तो परमदाता, महादेव, महान् दाता हैं। वस्तुत: हमारे पास जो कुछ भी है सब तो परमेश्वर ने ही हमें दिया है। किसी में विद्या है, किसी में वक्तृत्व है, किसी में कलाकारिता है, कहीं संगीत, कहीं वाद्य, कहीं तकनीकी कला, जो कुछ भी हममे विशिष्टता, विशेषता है, वह सब प्रभु की विभूति है। गीता का एक मार्मिक श्लोक देखिए-

'यद् यद् विभूतिमत्सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत् तदेवागच्छ त्वं मम तेजोंश सम्भवम्।।'
(गीता १०-४१)

संसार में जो कुछ भी विभूतियों वाला, विशेषता लिए श्री सम्पन्न, ऊर्जस्विता सब कुछ प्रभु के तेज का ही अंश है। प्रभु परमेश्वर से ही ये विभूतियां, ये गुण हमें मिलते हैं, हममे उद्भूत होते हैं-

'मुझमें मेरा कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर। तेरा तुझको अर्पण, क्या लागत है मोर।।'

इसमें 'क्या लागत है मोर' यह अंश अर्पण को हल्का बना दे रहा है। बस, अर्पण ही पर्याप्त है-

'त्वदीयं वस्तु हे नाथ! तुभ्यमेव समर्पये।'

मनुष्य की उत्तम सामग्री क्या है? हमारे जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि ही हमारी उत्तम सामग्री है। हम जो कुछ भी अपनी उपलब्धि, अपने जीवन की सफलता समझते हों, उसे प्रभु की प्रजा के कल्यार्ण अर्पित करने की चेष्टा करते रहें।

अर्पण की मानसिकता आधे मन से नही होती। Whole hearted पूरे मन से अर्पण ही वास्तविक भक्ति होती है। स्वामी दयानन्द की बहुत लंबी समाधि लगने लगी थी। किंतु वे ब्रह्मानंद के सुख को त्याग कर भी संसार के कल्याण और वेद विद्या के प्रचार में लग गये। ऋषि के जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि को उन्होंने प्रभु की प्रजा को अर्पित कर दिया। वस्तुत: जब अपने प्रभु के साथ भक्त की एकात्मकता हो जाती है तो सम्पूर्ण समर्पण की बात भी तो नहीं रह जाती, उस समय की भावना को निम्न मंत्रांश में देखिए-

'त्वमस्माकम् तवस्मसि'

(ऋ. ८-९२-३२७)

प्रभु आप हमारे हैं और हम आपके हैं। इस भावना से जाग जाने वो भक्त अपने अहम् से बहुत दूर तक मुक्त हो जाता है। फिर जो कुछ भी है वह सब भगवान् का ही है और मैं, मेरी योग्यता, उपलब्धि सब उसी प्रभु का दान है, सब उसी को अर्पित हो, यही उसकी भक्ति है।

OO

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाए।

■ **प्रबंध संपादक : 9871798221**

मनु स्मृति और धर्म

डा. दीवान चन्द, डी.लिट.

(गतांक से आगे...)

पशु पक्षी एक साथ रहते हैं, खेलते हैं, परंतु एक साथ विचार नहीं कर सकते। विचारों के आदान-प्रदान की कीमत इस समझौते पर निर्भर है कि प्रत्येक मनुष्य की जिह्वा पर वही आये, जो उसके मन में है। यह सत्य भाषण है।

इस तरह न्याय के अंतर्गत मनु की सूची में निम्न लक्षण आते हैं- सत्य, अस्तेय, अक्रोध, क्षमा। मनु ने अपनी सूची में शौच को भी रखा है। जो कुछ भी हम करते हैं, किसी प्रयोजन से करते हैं। स्वास्थ्य के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है-

१. जीवन में प्रतिक्षण जो क्षति होती रहती है, उसे पूरा करने के लिए हम खायें, पियें। २. जो कुछ शरीर का अंश नहीं बनता, उसे शरीर के बाहर फेंद दें।

शौच का संबंध प्रायः दूसरी क्रिया से है। अपान इसमें सहायक होता है। मल-मूत्र, पसीना, श्वास के साथ बेकार माद्दा बाहर निकलता रहता है। शौच इस क्रिया की सचेत सहायता है। एक अंग्रेजी कथन के अनुसार 'शौच आस्तिक भाव से दूसरे दर्जे पर है। मैंने ऊपर कहा है कि यदि धर्म के लक्षण एक के स्थान में दो श्लोकों में वर्णन होते, तो संभवतः सूची में कुछ और लक्षण भी सम्मिलित हो सकते थे। मुझे इस सूची में कुछ अपूर्णता दिखाई देती है।

धर्म अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों से संबंध रखता है। अभ्युदय लोक की कुशलता प्राप्त करना है, निःश्रेयस परलोक में सद्गति प्राप्त करना है। मनु की सूची लोक से परे नहीं देखती, यह आस्तिकता और नास्तिकता में भेद नहीं करती, या यों कहो कि इसके लिए नीति ही गन्तव्य है। योग दर्शन में 'ईश्वर-प्रणिधान' को पांचवां नियम बताया गया है। जहां तक लौकिक कल्याण का प्रश्न है, मनु की सूची में व्यक्ति और समाज को ध्यान में रखा गया है। परंतु एक महत्वपूर्ण संस्था, जो इन दोनों को मिलाती है, ध्यान में नहीं रही। यह संस्था परिवार है। कुछ समाजशास्त्री तो कहते हैं कि समाज में एकाई व्यक्ति नहीं, परिवार है। परिवार एक छोटा सा समूह होता है, परंतु इसमें व्यक्ति को विविध संबंधों में विचरना होता है, एक ही मनुष्य पुत्र, भाई, पति, पिता, स्वामी बनता है। परिवार को नैतिक सद्गुणों का गहवारा कहा गया है। परिवार में एक पुरुष और एक स्त्री द्वैत भाव को खोकर एक बन जाते हैं, मौलिक संबंध में पति सर्वथा पत्नी का ही हो जाता है और पत्नी सर्वथा पति की ही हो जाती है। ब्रह्मचर्य पारिवारिक जीवन की जान है। योग दर्शन में ब्रह्मचर्य को यमों में स्थान दिया गया है।

सामाजिक जीवन में न्याय का स्थान बहुत ऊंचा है। प्रत्येक मनुष्य के कुछ अधिकार होते हैं। यदि कोई दूसरा उन पर प्रहार करे तो सारा समाज प्रहार का विरोध करता है। सभ्य समाज में अपराध व्यक्ति पर नहीं, समाज पर प्रहार समझा जाता है। शासन मुझे कहता है- 'दूसरे को हानि न पहुंचाओ।' यह इससे आगे नहीं जाता। यदि कोई मनुष्य कठिनाई में हो और मैं क्षमता रखने पर भी उसकी सहायता न करूं, तो यह शासन की दृष्टि में अपराध नहीं। धर्म राजनीति से आगे जाता है, यह परोपकार को भी मेरा नैतिक दायित्व बताता है।

परोपकार के दो रूप विशेष महत्व रखते हैं- दान और यज्ञ। दान देने वाला किसी विशेष मनुष्य की सामयिक कठिनाई को दूर करता है, यज्ञ के अंतर्गत ऐसे सब काम आते हैं जिनका लाभ अनेक मनुष्यों को पहुंचता है, और देर तक पहुंचता रहता है। मनु की सूची में समाज सेवा या सार्वजनिक कल्याण को ध्यान में नहीं रखा गया। सभ्य समाज में तो, व्यक्ति को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किंतु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

राजनीति : राजनीति का विचार-विषय राष्ट्र है। राष्ट्र में चार आवश्यक अंश समझे जाते हैं- १. जनसंख्या, २. भूमि, ३. स्वाधीनता, ४. शासन, कर्मचारी वर्ग।

१. प्रत्येक राष्ट्र में ऐसे लोगों की

धर्म अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों से संबंध रखता है। अभ्युदय लोक की कुशलता प्राप्त करना है, निःश्रेयस परलोक में सद्गति प्राप्त करना है। मनु की सूची लोक से परे नहीं देखती, यह आस्तिकता और नास्तिकता में भेद नहीं करती, या यों कहो कि इसके लिए नीति ही गन्तव्य है। योग दर्शन में 'ईश्वर-प्रणिधान' को पांचवां नियम बताया गया है। जहां तक लौकिक कल्याण का प्रश्न है, मनु की सूची में व्यक्ति और समाज को ध्यान में रखा गया है। परंतु एक महत्वपूर्ण संस्था, जो इन दोनों को मिलाती है, ध्यान में नहीं रही। यह संस्था परिवार है। कुछ समाजशास्त्री तो कहते हैं कि समाज में एकाई व्यक्ति नहीं, परिवार है। परिवार एक छोटा सा समूह होता है, परंतु इसमें व्यक्ति को विविध संबंधों में विचरना होता है, एक ही मनुष्य पुत्र, भाई, पति, पिता, स्वामी बनता है। परिवार को नैतिक सद्गुणों का गहवारा कहा गया है।

पर्याप्त संख्या होती है, जो स्थाई रूप से उसमें रहते हैं, जो अपने आपको उसका अंग समझते हैं और जिन्हें ऐसा अंग स्वीकार किया जाता है। जो बालक भारती माता-पिता की संतान के रूप में भारत में पैदा होता है वह भारती है।

२. भूमि का निश्चित विस्तार राष्ट्र की भूमि होती है। इस पर किसी अन्य का अधिकार नहीं होता।

३. प्रत्येक राष्ट्र अपनी भूमि पर, पूर्ण रूप से अधिकार रखता है। बहुत थोड़ी हालतों में कोई इलाका समझौते के फलस्वरूप एक से अधिक शासनों के अधीन होता है, साधारण स्थिति में प्रत्येक राष्ट्र स्वाधीन होता है। १९४७ में भारत स्वाधीन हुआ। उसमें पहले यह एक देश था, राष्ट्र था।

४. राष्ट्र का काम होता है कि- १. वह अपने इलाके में व्यवस्था रखे। २. जनता को ऐसी सुविधाएं दे कि वे प्रगति के मार्ग पर बढ़ती जायें। ३. जहां तक बन पड़े वह मानव जाति की प्रगति में अपना योगदान दे। प्रत्येक राष्ट्र मानव जाति का अंग होता है।

कर्त्तव्यों में प्रथम स्थान व्यवस्था का है। कभी-कभी यह व्यवस्था बाहर से भंग होती है, परंतु वर्तमान स्थिति में राष्ट्र का प्रमुख काम आंतरिक व्यवस्था बनाये रखना होता है। बहुसंख्या तो समझती है कि व्यवस्था बने रहने पर ही वे अपना काम कर सकते हैं, परंतु समाज में कुछ समाज विरोधी अंश भी होते हैं। राष्ट्र यह स्पष्ट कर देता है कि किस प्रकार के कर्म राष्ट्र विरोधी है। इनसे निपटने के लिए यह भी घोषित किया जाता है कि अपराधी को उचित दंड दिया जायेगा। जिस राष्ट्र में शक्तिशाली शासन-विभाग नहीं, जो केवल उपदेश को पर्याप्त समझता है, वह राष्ट्र कहलाने का अधिकार नहीं रखता। साधारण नागरिक के लिए यह बात अधिक महत्व की नहीं कि उसके देश का परिमाण कितना है, या उसकी जनसंख्या क्या है।

इन कर्त्तव्यों में प्रथम स्थान व्यवस्था का है। कभी-कभी यह व्यवस्था बाहर से भंग होती है, परंतु वर्तमान स्थिति में राष्ट्र का प्रमुख काम आंतरिक व्यवस्था बनाये रखना होता है। बहुसंख्या तो समझती है कि व्यवस्था बने रहने पर ही वे अपना काम कर सकते हैं, परंतु समाज में कुछ समाज विरोधी अंश भी होते हैं। राष्ट्र यह स्पष्ट कर देता है कि किस प्रकार के कर्म राष्ट्र विरोधी है। इनसे निपटने के लिए यह भी घोषित किया जाता है कि अपराधी को उचित दंड दिया जायेगा। जिस राष्ट्र में शक्तिशाली शासन-विभाग नहीं, जो केवल उपदेश को पर्याप्त समझता है, वह राष्ट्र कहलाने का अधिकार नहीं रखता। साधारण नागरिक के लिए यह बात अधिक महत्व की नहीं कि उसके देश का परिमाण कितना है, या उसकी जनसंख्या क्या है। उसके लिए महत्व की बात यह है कि वह अपना काम स्वाधीनता से, बिना बाहरी रोक के कर सके। इसके लिए आवश्यक है कि देश में सबल दंड-नीति का शासन हो।

मनु स्मृति में इस तथ्य को समझा गया है। ७-१९ में कहा है- 'दंड ही शासन करता है, वही प्रजा का रक्षक है। नागरिक सोये होते हैं, तो भी दंड जागता है। बुद्धिमान दंड को ही धर्म कहते हैं।' थोड़े शब्दों में यहां कई मर्मपूर्ण बातें कह दी गई हैं। यदि एक शब्द में राज्य-धर्म का लक्षण करना हो तो कह सकते हैं कि दंड यह धर्म है।

आजकल सभी सभ्य देशों में माना जाता है कि वास्तव में शासन राज-नियम का है, कर्मचारी तो इस नियम के एजेंट होते हैं राज-नियम ही लोगों की रक्षा करता है। राज-नियम का केंद्र दंड-व्यवस्था है। हमारी शारीरिक स्थिति ऐसी है कि जीवन का अच्छा भाग नींद में गुजरता है। हम रात को सोते हैं, पुलिस कर्मचारी सड़कों पर घूमता है। वह भी सो जाये, तो राज-नियम तो सदा जागता है। यह बोध कि दंड-नियम कभी सोता नहीं, व्यवस्था बनाये रखने में बहुत सहायक होता है।

कुशल जीवन के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति के पास उचित निर्वाह के लिए सामग्री हो। राष्ट्र को भी अपना काम चलाने के लिए पर्याप्त सामग्री की आवश्यकता होती है। यह साधन कहां से आते हैं? रक्षा और अन्य सेवाएं जो राष्ट्र नागरिकों को देता है, उनकी कीमत नागरिकों को देनी होती है। यह कीमत करों के रूप में प्राप्त की जाती है। अच्छा नागरिक करों को प्रसन्नता से देता है। वह समझता है कि जो कुछ वह देता है, वह किसी नये रूप में उसके पास लौट आयेगा। परंतु बहुतेरे लोग यह भी चाहते हैं कि जहां तक हो सके, वे इस बोझ से बचे रहें। शासन इस स्थिति में क्या कर सकता है? शासन के लिए सभी नागरिक एक जैसे हैं, हरेक को अपना ऋण चुकाना ही चाहिए। यहां भी दंड काम आता है।

मनु स्मृति (७/९९) में कहा है कि शासन दंड से अप्राप्त के प्राप्त करने की इच्छा करे। शासन की आय का बड़ा भाग करों के रूप में प्राप्त होता है, इसके अतिरिक्त आय के अन्य साधन भी होते हैं। भूमि के नीचे जो धातुएं दबी होती है, वे राष्ट्र की सम्पत्ति समझी जाती है, देश के वन राष्ट्र की सम्पत्ति होते हैं। इसके अतिरिक्त देश में बहुतेरी भूमि भी राष्ट्र की ही होती है। आधुनिक काल में राष्ट्र व्यापार और उद्योग में भी पड़ते हैं। करों की प्राप्ति में दंड का प्रयोग करना पड़ता है, अन्य साधनों के प्रयोग में दंड की आवश्यकता नहीं होती। OO

ईश्वर : पूजा क्यों व कैसे करें

ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

कृष्ण औतार
बढ़ापुर, बिजनौर, उप्र

यह परमेश्वर पूर्ण है, सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान् अखण्ड है। यह जगत् भी स्वसत्ता पूर्ण है कुछ भी ऊना नहीं है। पूर्ण स्वरूप भगवान् से ही यह पूर्ण जगत् उदय होता है। उस परम पूर्ण परमेश्वर से पूर्णता लेकर अपने में धारण करके फिर भी अनन्त महिमामय भगवान् सर्वत्र पूर्ण ही रह जाता है वह कदापि खंडित नहीं होता। ईश्वर, जीव और प्रकृति-ये तीनों अनादि पदार्थ हैं। इन्हें किसी ने भी उत्पन्न नहीं किया है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ आदि गुणों से युक्त है। आत्मा को परमात्मा ने उत्पन्न नहीं किया है। ईश्वर सृष्टि की रचना जीवात्माओं के कर्मफल भोग कराने तथा आत्मज्ञान एवं परमात्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए मानव शरीर प्रदान करता है। मानव आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र तथा फल भोगने में परतंत्र है।

आज संसार में सैकड़ों प्रकार से ईश्वर की पूजा की जाती है और सभी अपनी-अपनी पूजा पद्धति को दूसरों से श्रेष्ठ बतलाते हैं। वास्तव में कौन सी पद्धति सर्वश्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक है, इस लेख में विचार किया गया है। पूजा शब्द 'पूज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है सेवा। इसी प्रकार 'भक्ति' शब्द में 'भज्' धातु है, भज सेवायां, भज का अर्थ भी सेवा है। दोनों शब्दों का अर्थ सेवा है। ईश्वर की पूजा करने से पूर्व जानना आवश्यक है कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है, जिससे हम उसकी सेवा कर सकें। ईश्वर और प्रकृति दोनों अपने में पूर्ण हैं, इनमें न तो किसी प्रकार की न्यूनता है और न ही इन्हें किसी चीज की आवश्यकता है। पूर्ण परमेश्वर ने ही यह पूर्ण सृष्टि प्रकट की है। इनमें से प्रकृति को न तो अपना ज्ञान है और न अन्य का, किंतु परमात्मा स्वयं को भी जानता है और अपने से अन्यों को भी जानता है। आवश्यकता केवल जीवात्मा को है। जीवात्मा ईश्वर से संसर्ग से मुक्ति अथवा परमानन्द को प्राप्त कर सकता है और प्रकृति से वह साधारण सुख से लेकर चक्रवर्ती राज्य तक प्राप्त कर सकता है।

मनुष्य की सेवा जैसे की जाती है, वैसे ईश्वर की नहीं की जा सकती। आज तक कोई भी व्यक्ति अथवा भगवान् का बड़े से बड़ा भक्त कहलाने वाला भी यह नहीं पता लगा सका कि ईश्वर को किस वस्तु की आवश्यकता है और न ही भविष्य में कभी पता लग सकेगा। जल वह हमें देता है, भोजन वह हमें देता है, श्वास लेने के लिए शुद्ध वायु वही हमें देता है तथा जीवन-यापन की अन्य सभी सामग्री वही देता है। जिसका भंडार पूर्ण है, वह हमसे क्या लेगा या चाहेगा? उसी की दी हुई वस्तुओं से उसकी पूजा कैसे हो सकती है? आज संसार में भगवान् के एजेंट बने हजारों स्वार्थी लोगां ने अपनी-अपनी मर्जी व क्षमता के अनुसार अलग-अलग नाम से ईश्वर बना लिए हैं। किसी ने लकड़ी के, किसी ने पत्थर के, किसी ने चांदी के तो किसी ने सोने के बना लिए। एक ही ईश्वर के हजारों ईश्वर बनाकर उन्हें खिलाना, पिलाना आरम्भ किया।

आज का मानव समस्त संसार को एक ही ईश्वर का कारखाना मानकर अपने को उस अमर पिता की संतान 'अमृतस्य पुत्राः' समझ कर उसी की अज्ञानुसार (वेदानुकूल) अपने कर्त्तव्यों का पालन करे तो संसार स्वर्गधाम बन जाये। विश्व में सुख व शांति स्थापित करने के उद्देश्य से 1877 में दिल्ली दरबार के अवसर पर महर्षि दयानन्द ने एक विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया था। जिसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधियों को अपने-अपने मतानुसार 5-5 ऐसे नियम प्रस्तुत करने का सुझाव दिया था जिन पर किसी को भी एतराज न हो और फिर सर्वसम्मति से एक विश्व मानव धर्म की स्थापना करके संसार के सभी मानव उस पर आचरण करें, कितु मानव जाति के दुर्भाग्य से विभिन्न मतवालों की अलग की पहचान समाप्त होने के भय के कारण उक्त प्रस्ताव पास न हो सका। अंत में महर्षि ने कहा जब तक आप जैसे अलग-अलग मतवाले रहेंगे तब तक दुनिया में सुख शांति स्थापित नहीं हो सकती और वही आज तक हो रहा है। आज संसार को एक ऐसे ही 'विश्व मानव धर्म' की आवश्यकता है जो ब्राह्मणवाद, कठमुल्लावाद, पादरीवाद एवं अन्य सभी वादों से सर्वथा मुक्त हो और वह एक मात्र वैदिक धर्म जो देश, काल, जाति की सीमाओं से मुक्त है।

जिस ईश्वर ने यह सृष्टि बनाई और हमारा यह शरीर बनाया, हमने उस ईश्वर को बना लिया। जो हमें सब कुछ देता है, हम उसे देने लगे। जो सर्वत्र है, उसे एकत्र कर दिया। जो स्वतंत्र है उसे परतंत्र बना दिया। जो सर्वशक्तिमान है, उसे शक्तिहीन बना दिया। जो सब का रक्षक है हम उसके रक्षक बन गये। जो सबका ईश है हम उसके स्वामी बन गये। बड़े-बड़े सेठों ने मंदिर बनवा रखे हैं। उनमें जो भगवान् रखे हैं, वे सेठ जी के खरीदे हुए हैं। अब सेठ जी अपने भगवान् की पूजा भी करते हैं और उन्हें भोजन-पानी भी देते हैं तथा उनकी रक्षा भी करते हैं। रात में ताला लगा कर रखते हैं, कहीं कोई चोर उनके भगवान् को चुराकर न ले जाये। इन्हीं भावों को इस प्रकार संजोया गया है-

हे मानव! अभी भी जाग : हे मानव! जाग अभी भी जाग, जिनको पूज रहा तू सदियों से आज वे पत्थर के भगवान् घड़े जाते हैं सुबह और शाम। ऐ भोले मानव! क्यों इन पत्थरों से उस सच्चिदानन्द को करता हूं साकार? क्या कभी घड़ा जा सकता है वह, अनादि अनुपम, सर्वाधिकार और निराकार? हे मानव! जाग तू भी जाग, जिनको पूज रहा हू सदियों से आज वे पत्थर के भगवान खरीदे-बेचे जाते हैं दिन-रात। ऐ भोले मानव! क्यों इन पत्थरों से भगवान का करता है तू व्यापार? क्या कभी खरीदा बेचा जा सकता है वह अजन्मा, अनंत नित्य और निर्विकार? हे मानव! जाग अभी जाग, जिनको पूज रहा तू सदियों से आज मंदिर-मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारे तक सीमित रखे जाते हैं वे भगवान। ऐ भोले मानव! क्यों इन भवनों में बना दिया है तूने उस सृष्टिकर्ता को, क्या कभी सीमित किया जा सकता है अन्तर्यामी, अजर-अमर सर्वव्य। हे मानव! जाग अभी भी जाग, जिनको पूज रहा तू सदियों से आज ये पत्थर के भगवान चोरी होते हैं खुलेआम। ऐ भोले मानव! क्यों इन पत्थरों से भगवान को करता है तू बदनाम? क्या कभी चोरी हो सकता है, न्यायकारी, दयालु सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान? यदि नहीं तो हे मानव! जाग अभी भी जाग। इस क्षण ही संकल्प ले और प्रारम्भ कर दे 'ओउम्' का जाप। तभी कर सकता है तू अपना शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उद्धार। वास्तव में यही होगा, उस महर्षि के अमर संदेश का सार।

मुझे एक बार भिलाई स्टील प्लांट देखने का अवसर मिला। वहां एक ओर मंदिर, दूसरी ओर गुरुद्वारा, तीसरी ओर मस्जिद और निकट ही गिरजाघर देखकर मन में विचार आया- कारखाना भारत सरकार का है, जिसमें सभी धर्म-मतों के कर्मचारी एक साथ मिलकर अपने-अपने नियत कार्यों को करते हैं परंतु ड्यूटी पूरी करने के बाद कोई मंदिर में जा रहा है तो कोई गिरजे में। इस प्रकार अज्ञानी मानव ने समस्त संसार में व्याप्त एक ही भगवान् को अलग-अलग बांटकर अपने मनों में भेदभाव की दीवारें खड़ी कर ली हैं, जिसके कारण संसार में कितनी अशांति मची हुई है। यदि आज का मानव समस्त संसार को एक ही ईश्वर का कारखाना मानकर अपने को उस अमर पिता की संतान 'अमृतस्य पुत्राः' समझ कर उसी की अज्ञानुसार (वेदानुकूल) अपने कर्त्तव्यों का पालन करे तो संसार स्वर्गधाम बन जाये।

विश्व में सुख व शांति स्थापित करने के उद्देश्य से 1877 में दिल्ली दरबार के अवसर पर महर्षि दयानन्द ने एक विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया था। जिसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधियों को अपने-अपने मतानुसार 5-5 ऐसे नियम प्रस्तुत करने का सुझाव दिया था जिन पर किसी को भी एतराज न हो और फिर सर्वसम्मति से एक विश्व मानव धर्म की स्थापना करके संसार के सभी मानव उस पर आचरण करें, किंतु मानव जाति के दुर्भाग्य से विभिन्न मतवालों की अलग की पहचान समाप्त होने के भय के कारण उक्त प्रस्ताव पास न हो सका। अंत में महर्षि ने कहा जब तक आप जैसे अलग-अलग मतवाले रहेंगे तब तक दुनिया में सुख शांति स्थापित नहीं हो सकती और वही आज तक हो रहा है। आज संसार को एक ऐसे ही 'विश्व मानव धर्म' की आवश्यकता है जो ब्राह्मणवाद, कठमुल्लावाद, पादरीवाद एवं अन्य सभी वादों से सर्वथा मुक्त हो और वह एक मात्र वैदिक धर्म जो देश, काल, जाति की सीमाओं से मुक्त है। ○○

गृहस्थ गीता

- अतिथि ही घर का वैभव है, प्रेम ही घर की प्रतिष्ठा है। व्यवस्था ही घर की शोभा है, समाधान ही घर का सुख है।
- सदाचार ही घर का सुवास है, ऐसे घर में प्रभु का वास है। ऋण हो ऐसा मत खर्च करो, पाप की कमाई मत करो।
- चिंता हो ऐसा जीवन मत जीओ, रोग हो तो ऐसा मत खाओ।
- पहले नमस्ते परम पिता को, जिसने सृष्टि रचाई है।
- दूजी नमस्ते माता-पिता को, जिसे गोद खिलाया है।
- तीजी नमस्ते प्यारे ऋषि को, वेदों का ज्ञान कराया है।

शिक्षण : एक व्रत

वैदिक काल में बालकों को शिक्षा की दीक्षा दी जाती थी। तप: स्वाध्याय निरत ऋषि, समाज में यज्ञ, एवं तपोवन में शिक्षण- ऐसे द्विविध रूप से सांस्कृतिक संवर्धन में व्यस्त रहते थे। जैसे एक भी ऋषि अविवाहित नहीं जान पड़ते, वैसे ही एक भी ऋषि तपोवन या आश्रम से न जुड़े हुए हो-ऐसा भी दिखायी नहीं पड़ता। समाज के धर्म और नीति-मूल्य रक्षण में व्यस्त ऋषि, राजा और शिक्षण-इन दोनों की ओर विशेष लक्ष्य दिया करते थे, क्यों कि यज्ञ की यथार्थता और समाज का नैतिक आरोग्य, राजा और शिक्षण-इन दोनों पर विशेष अवलंबित होता है। यज्ञ द्वारा समाज और शिक्षण द्वारा भावि व्यक्ति, विशेष रूप से पुष्ट होते थे। संस्कृति और अध्यात्म की अन्योन्यता चरितार्थ होती थी।

शिक्षण मंदिर या शिक्षा कारखाने : प्राचीन काल की यह श्रेष्ठ धरोहर, दुर्दैव से आज जर्जरित हुई है। शिक्षण प्रबुद्धों द्वारा उपेक्षित रहा है, वे भूल गये हैं कि Current Society is primarily a function of Past education system और Future Society would be a primary function of Current education system. सरकार, धर्म और समाज-सेवक सभी ने केवल शिक्षण का एकांगी विकास ही किया है। परिणामत: सांप्रत शालाएं Polished, तर्कवादी, छीछले, महत्वाकांक्षी और भोगवादी बालक पैदा करने की स्पर्धात्मक फैक्टरियां बन गयी है, क्यों कि शिक्षण सरकार के हाथ से अब स्पर्धात्मक मूडीवादीयों के हाथ में चला गया है। It's all about Profit ma&imisation, Mass Production and Competitive stress! सच्चे शिक्षणप्रेमीयों की एकता और कटिबद्धता के बिना Survival of the fittest के दिन भारतीय शिक्षण क्षेत्र में दूर नहीं। शहर-शहर में Mall और Big Bazar की तरह किसी मूडीवादी Chain of schools की शाखाएं होगी, और उन Brands को जूठी गरिमा होगी। Convent schools के बाद, अब तक केवल महानगरों में चलनेवाली Corporatised शालाओं के हाथ भारतीय शिक्षण प्रणाली और संस्कृति का ह्रास होगा, क्यों कि छोटे छोटे शहरों में भी वे अड्डा जमायेगी।

गीता का सूचन : शिक्षण ऋषियों का तप था और ऋषियों का तप, जिम्मेदार नागरिकों का 'व्रत' होता है। आज की शिक्षण समस्याओं का एक हल है, ब्राह्मण्य खड़ा करना और उसे सुयोग्य अवकाश कर देना। यह सांस्कृतिक आवश्यकता भी है क्यों कि 'ब्राह्मणस्य हि रक्षणेन रक्षित: वैदिकधर्म:।' पर ब्राह्मण्य के गुण कौन से? ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म समजाते हुए गीता कहती है- **शमो दमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥ १८-४२ ॥**

जरा भी आश्चर्य की बात नहीं कि 'कर्मकांड कराना' इस लिस्ट में नहीं आता! यह नोंधनीय है कि गीता ने चारों वर्ण के कर्म, गुणस्वरूप में समझाये हैं । स्थूल कर्मों में भी सूक्ष्मतर गुणों की ओर ही भगवान का निर्देश है! ज्ञान-विज्ञान में आस्था होना, रुचि होना, उन्हें टिकाना - यह ब्राह्मण का स्वाभाविक कर्तव्य कहा गया है। स्वामी विवेकानंद समाज में ब्राह्मण वृत्ति खड़ी करने की बात करते हैं, तब गीता ने कहे उपर्युक्त गुण, उन्हें अपेक्षित होंगे। शिक्षण 'व्रत' स्वीकारने पर ये गुण सहसा विकसित होते हैं या जीवंत रहते हैं।

शिक्षण 'व्रत' किसका : सामान्यतया बालक को स्कूल में भरती करा दिया कि

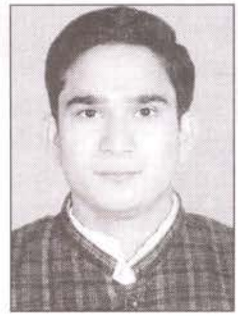

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

पालकों को लगता है, शिक्षण यानी स्कूल की जिम्मेदारी और स्कूल यानी शिक्षक अर्थात् शिक्षकों की जिम्मेदारी। पर शिक्षकों को लगता है प्रिंसिपल की जिम्मेदारी, प्रिंसिपल को लगता है मैनेजमेंट और सरकार की जिम्मेदारी, यह विषचक्र में स्पर्धा मिलाओ, तो शिक्षण यानी बच्चों के लिए बोझ, शिक्षकों के लिए Occupation (येन केन प्रकार से प्रवृत्त रहने का क्षेत्र) और Management के लिए Business अथवा Social Service. तो फिर प्रश्न खड़ा होता है कि शिक्षण 'व्रत' किसका? शायद किसी का भी नहीं।

समाज सेवा नहीं, समाज धारणा : जीवन विकास यह तो अंतरंग जीवन का अनंत प्रवाह है। वह सफर तय करने में अनेक माध्यमों के साथ साथ शिक्षण को भी महत्वपूर्ण माध्यम बना लेने में और शिक्षण को व्रत का स्थान देने में विवेकपूर्णता है। जिन में जीवन विकास की समझ या तीव्रता नहीं, उनके लिए शिक्षण 'व्रत' को नौकरी, व्यवसाय, उपजीवन, संसार, व्यवहार, घूमना-फिरना और मौज-शौख इत्यादि के साथ-साथ, छोटी मात्रा में जोड़ देना इतना कठिन नहीं होगा। पर इस यज्ञ में जुड़े हुए सभी ने यह बात तो समज लेनी चाहिए कि 'शिक्षण समाज सेवा का नहीं, समाज धारणा का काम है।'

OO

अनुशासनम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

मानव जीवने सफलता वाप्तये अनुशासनस्य महती आवश्यकता विद्यते। अनुशासन बिना मानव जीवनम्, मानव समाजश्च पशुवत् भवेत्। आंतरिकशक्तीनां सम्यक्तया समुचितदिक्षु विकासाय, व्यक्तित्वस्य पूर्णरूपेण विकासाय च अनुशासनस्य महती आवश्यकता भवति। अनुशासनेनैव मानवजीवनं सुखमयं समृद्धश्च भवति।

मानवीयक्रियाकलापानां सम्पादने या सुव्यवस्था दृश्यत। नुशासनादेव। एतद्नुशासनम् सुशिक्षाजन्यं भवति। अनुशासनस्य शिक्षा मनुष्यः सर्वप्रथम स्वकुटुम्बादेव प्राप्नोति। शैशवे माता शिक्षयति। यथा यथा तस्य विकासः भवति अन्येऽपि कुटुम्बिनः तं सामाजिक नियमानां पानाय उपादिशन्ति। एवं मनुष्यः यावज्जीवनं सततं शिक्षां गृह्णाति। किंकार्य कथ, केन प्रकारेण कदा करणीयम्, कथं वा व्यवहर्त्तव्यमिति सर्वम् अनुशासनाधीनं भवति।

अनुशासनादेव मनुष्येषु सत्य-अहिंसा-त्याग-तितिक्षा-दया-दान-परोपकार प्रभृतीनि जीवनमूल्यानि विकसन्ति। गुरोः सम्मानं कर्त्तव्यम् मधुरं व्यक्तव्यम्, जीवेषु दया कर्त्तव्या, आत्मवत् सर्वप्राणिषु द्रष्टव्यम् इत्यादीनाम् उपदेशानां शिक्षणाद् मनुष्यः उदारचरित्रः विनम्र संभ्रांतश्च भवति। शिक्षालयेष्वपि अनुशासनस्य शिक्षा प्रमुखतया दीयते। गुरुः स्वसदाचारणेन छात्रेषु सद्गुणानामाधानम् के सन्मार्गनियोजनं करोति। यथाकालं नियमेन नियतविधिना विहितकर्तव्याणां सम्यगरूपेण सम्पादनमेव अनुशासनं भवति। विहितकार्याणां यथावत् सम्पादनेन एव लक्ष्यसिद्धिः भवति। अनेन अनुशासनेन आचारशुद्धिः भवति। आचारादेव मनुष्यः सर्व लभते। उक्तं च-

आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचारात् कीर्तिमाप्नोति पुरुषः प्रेत्य चेह च॥

कस्यापि राष्ट्रस्य समुन्नतिः अनुशासनादेव सम्भवति। अनुशासनादेव कलहस्य भावना तिरोहति। जनेषु परस्परं प्रीतिः समुदेति येन सर्वत्र सहयोगस्य सम्मानस्य च भावना संवर्धते, जीवनश्च सुखमयं भवति। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'

मानवीयक्रियाकलापानां सम्पादने या सुव्यवस्था दृश्यत नुशासनादेव। एतद्नुशासनम् सुशिक्षाजन्यं भवति। अनुशासनस्य शिक्षा मनुष्यः सर्वप्रथम स्वकुटुम्बादेव प्राप्नोति। शैशवे माता शिक्षयति। यथा यथा तस्य विकासः भवति अन्येऽपि कुटुम्बिनः तं सामाजिक नियमानां पानाय उपादिशन्ति। एवं मनुष्यः यावज्जीवन सततं शिक्षां गृह्णाति। किंकार्य कथ, केन प्रकारेण कदा करणीयम्, कथं वा व्यवहर्त्तव्यमिति सर्वम् अनुशासनाधीनं भवति। अनुशासनादेव मनुष्येषु सत्य-अहिंसा-त्याग-तितिक्षा-दया-दान-परोपकार प्रभृतीनि जीवनमूल्यानि विकसन्ति। गुरोः सम्मानं कर्त्तव्यम् मधुरं व्यक्तव्यम्, जीवेषु दया कर्त्तव्या, आत्मवत् सर्वप्राणिषु द्रष्टव्यम् इत्यादीनाम् उपदेशानां शिक्षणाद् मनुष्यः उदारचरित्रः विनम्र संभ्रांतश्च भवति। शिक्षालयेष्वपि अनुशासनस्य शिक्षा प्रमुखतया दीयते। गुरुः स्वसदाचारणेन छात्रेषु सद्गुणानामाधानम् के सन्मार्गनियोजनं करोति। यथाकालं नियमेन नियतविधिना विहितकर्तव्याणां सम्यगरूपेण सम्पादनमेव अनुशासनं भवति।

इत्युपदेशः अनुशासनप्रियाणां सत्पुरुषाणां लोकहिताय तोक्षते सर्वत्रानुशासनम्।

अस्माकं देशः भारतवर्षः धार्मिकः। अस्य प्राचीनेतिहासः धर्मेणानुप्राणितः विद्यते। अत्र सम्पूर्ण मानवजीवनं चतुर्षु आश्रमेषु विभज्य तेषां कर्त्तव्यानि धर्मेण निर्धारितानि सन्ति। तत्र बाल्यावस्थायां व्यक्तित्वस्य सम्यगविकासहेतवे अनुशासनस्य प्रशिक्षणम् आवश्यकं भवति। यतः बालक एव भविष्यकाले समाजस्य राष्ट्रस्य च नायकः भवति। बाल्यावस्थायां गृहीतशिक्षया एव बालकः धनं धर्मं च अर्जयति। अतः शैशवे यत्नेन बालकेभ्यः अनुशासनस्य शिक्षा प्रदातव्या। अन्यथा जरायां तस्य जीवने दुःखमेव भविष्यति। उक्तं च-

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति॥

अस्तु, अनेन हेतुना अनुशासनस्य शिक्षा अनिवार्यतया। ग्रहणीया आधुनिकयुगे स्वतंत्रतां प्राप्य जना अनुशासनं बंधनं पारतंत्र्यमिति मन्यन्ते, तन्नोचितम्। यदि कोऽपि कस्यापि आदेशं न पालयेत्, तदा लोके कीदृशी दुर्व्यवस्था भवेदिति कल्पनया एव भयम् उत्पद्यते। सम्प्रति सर्वत्र अशान्तेः एव। सर्वत्र सुखसमृद्धिप्रसाराय। ○○

- **जिसको परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान है, जो आलस्य को छोड़कर सदा उद्योगी, सुखदुःखादि का सहन, धर्म का नित्य सेवन करने वाला, जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ा कर अधर्म की ओर न खींच सके वह पंडित कहाता है।**
- **यह शरीर नश्वर है, हमें इस शरीर के माध्यम से केवल एक मौका मिला है, खुद को साबित करने का कि, मनुष्यता और आत्मविवेक क्या है।**

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी विवेकानन्द

पुण्य तिथि : 4 जुलाई
शत्-शत् नमन

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता में शिमला पल्लै में 12 जनवरी 1863 को हुआ था और उनकी मृत्यु 4 जुलाई 1902 को हुई थी। वह श्री रामकृष्ण परमहंस के मुख्य अनुयायियों में से एक थे। इनका जन्म से नाम नरेन्द्र दत्त था, जो बाद में रामकृष्ण मिशन के संस्थापक बने। वह भारतीय मूल के व्यक्ति थे, जिन्होंने वेदांत के हिन्दू दर्शन और योग को यूरोप व अमेरिका में परिचित कराया। उन्होंने आधुनिक भारत में हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित किया। उनके प्रेरणादायक भाषणों का अभी भी देश के युवाओं द्वारा अनुसरण किया जाता है। उन्होंने 1893 में शिकागो की विश्व धर्म महासभा में हिन्दू धर्म को परिचित कराया था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त, कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील, और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। स्वामी विवेकानंद अपने पिता के तर्कपूर्ण मस्तिष्क और माता के धार्मिक स्वभाव से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी माता से आत्मनियंत्रण सीखा और बाद में ध्यान में विशेषज्ञ बन गए। उनका आत्म नियंत्रण वास्तव में आश्चर्यजनक था, जिसका प्रयोग करके वह आसानी से समाधी की स्थिति में प्रवेश कर सकते थे। उन्होंने युवा अवस्था में ही उल्लेखनीय नेतृत्व की गुणवत्ता का विकास किया। वह युवा अवस्था में ब्रह्मसमाज से परिचित होने के बाद श्री रामकृष्ण के सम्पर्क में आए। वह अपने साधु-भाईयों के साथ बोरानगर मठ में रहने लगे। अपने बाद के जीवन में, उन्होंने भारत भ्रमण का निर्णय लिया और जगह-जगह घूमना शुरू कर दिया और त्रिरुवंतपुरम् पहुंच गए, जहां उन्होंने शिकागो धर्म सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय किया। कई स्थानों पर अपने प्रभावी भाषणों और व्याख्यानों को देने के बाद वह पूरे विश्व में लोकप्रिय हो गए। भारत लौटने के बाद उन्होंने 1897 में रामकृष्ण मिशन और मठों, 1899 में मायावती (अल्मोड़ा के पास) में अद्वितीय आश्रम की स्थापना की। आश्रम रामकृष्ण मठ की शाखा था। प्रसिद्ध आरती गीत, खानदान भव बंधन, उनके द्वारा रचित है। एक बार उन्होंने बेलूर मठ में तीन घंटों तक ध्यान किया था। भारत में उनकी ख्याति पहले ही पहुंच चुकी थी। भारतीय अध्यात्मवाद के प्रचार और प्रसार के लिए उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। मिशन की सफलता के लिए उन्होंने लगातार श्रम किया, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। 4 जुलाई, 1902 ई. को रात्रि के नौ बजे, 39 वर्ष की अल्पायु में 'ओ३म्' ध्वनि के उच्चारण के साथ उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। परंतु उनका संदेश कि 'उठो जागो और तब तक चैन की सांस न लो जब तक भारत समृद्ध न हो जाय'-हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

क्रांतिकारी मंगल पांडे

जयंती : 19 जुलाई
शत्-शत् नमन

क्रांतिकारी मंगल पांडे का जन्म उत्तरी भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद ग्राम में दिवाकर पांडे के परिवार में हुआ था। जन्म से ही हिंदू धर्म पर उनका बहुत विश्वास था, उनके अनुसार हिंदू धर्म श्रेष्ठ धर्म था। 1849 में पांडे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्मी में शामिल हुए। कहा जाता है की किसी ब्रिगेड के द्वारा उनकी आर्मी में भर्ती की गयी थी। 34 बंगाल थलसेना की कंपनी में उन्हें 6ठी कंपनी में शामिल किया गया, मंगल पांडे का ध्येय बहुत ऊंचा था, वे भविष्य में एक बड़ी सफलता हासिल करना चाहते थे। 1850 के मध्य में उन्हें बैरकपुर की रक्षा टुकड़ी में तैनात किया गया। तभी भारत में एक नयी रायफल का निर्माण किया गया और मंगल पांडे चर्बी युक्त हथियारों पर रोक लगाना चाहते थे। ये अफवाह फैल गयी थी की लोग हथियारों को चिकना बनाने के लिए गाय या सुअर के मांस का उपयोग करते है, जिससे हिंदू और मुस्लिम में फूट पड़ने लगी थी। इतिहास में 29 मार्च 1857 से संबंधित कई दस्तावेज है। लोग ऐसा मानने लगे थे की ब्रिटिश हिन्दुओं और मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट करने में लगे हुए है। मंगल पांडे ने इसका बहुत विरोध किया और इसके खिलाफ वे ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। एक दिन जब नए कारतूस थल सेना को बांटे गये थे तब मंगल पांडे ने उसे लेने से इंकार कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप उनके हथियार छीन लिए जाने व वर्दी उतार लेने का हुक्म हुआ। मंगल पांडे ने ब्रिटिशों के इस आदेश को मानने से इंकार कर दिया और उनकी रायफल छिनने के लिए आगे बढ़े अंग्रेज अफसर पर उन्होंने आक्रमण कर दिया। एक ऐसे भारतीय सैनिक थे जिन्होंने 29 मार्च 1857 को ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था। उस समय यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया था। हमले के कुछ समय बाद ही उन्हें फ़ासी की सजा सुनाई गयी और कुछ दिन बाद उन्हें फांसी दे दी गयी। लेकिन फांसी देने के बाद भी ब्रिटिश अधिकारी उनके पार्थिव शरीर के पास जाने से भी डर रहे थे।

क्रांतिकारी योद्धा चंद्रशेखर आजाद

जयंती : 23 जुलाई
शत्-शत् नमन

काकोरी ट्रेन डकैती और साण्डर्स की हत्या में शामिल निर्भय क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। चन्द्रशेखर आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भावरा गांव में व्यतीत हुआ। भील बालकों के साथ रहते-रहते चन्द्रशेखर आजाद की माता जगरानी देवी उन्हें संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थीं। इसलिए उन्हें संस्कृत सीखने के लिए विद्यापीठ, बनारस भेजा गया। दिसम्बर 1921 में जब गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन की शुरुआत की गयी इस समय मात्र चौहद वर्ष की उम्र में चंद्रशेखर आजाद ने इस आंदोलन में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया। जब चन्द्रशेखर से उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद और पिता का नाम 'स्वतंत्रता' बताया। यहीं से चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी का नाम चन्द्रशेखर आजाद पड़ गया था। चंद्रशेखर को पंद्रह दिनों के कड़े कारावास की सजा दी गयी। 1922 में गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया। इस घटना ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया। एक युवा क्रांतिकारी प्रनवेश चैटर्जी ने उन्हें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे क्रांतिकारी दल के संस्थापक रामप्रसाद बिस्मिल से मिलवाया। आजाद इस दल और बिस्मिल और बिस्मिल के, 'समान स्वतंत्रता और बिना किसी भेदभाव के सभी को अधिकार' जैसे विचारों से बहुत प्रभावित हुए। चन्द्रशेखर आजाद के समर्पण और निष्ठा की पहचान करने के बाद बिस्मिल ने चन्द्रशेखर आजाद को अपनी संस्था का सक्रिय सदस्य बना दिया। अंग्रेजी सरकार के धन को चोरी और डकैती जैसे कार्यों को अंजाम देकर चन्द्रशेखर आजाद अपने साथियों के साथ संस्था के लिए धन एकत्र करते थे। लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद ने अपने साथियों के साथ मिलकर सॉण्डर्स की हत्या भी की थी। आजाद का यह मानना था कि संघर्ष की राह में किसी हिंसा का होना कोई बड़ी बात नहीं है। जलियावाला बाग जैसे अमानवीय घटनाक्रम जिसमें हजारों निहत्थे और बेगुनाहों पर गोलियां बरसाई गई, ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया जिसके बाद उन्होंने हिंसा को ही अपना मार्ग बना लिया।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

जयंती : 23 जुलाई
शत्-शत् नमन

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जनक, स्वराज्य की मांग रखने वाले और कांग्रेस की उग्र विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरि जिले के चिकल गांव तालुका में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र पंत व माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। कहते हैं कि इनकी माता पार्वती बाई ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पूरे अश्विन महीने में निर्जला व्रत रखकर सूर्य की उपासना की थी, इसके बाद तिलक का जन्म हुआ था। इनके जन्म के समय इनकी माता बहुत दुर्बल हो गयी थी। जन्म के काफी समय बाद ये दोनों स्वस्थ्य हुये। बाल गंगाधर तिलक के बचपन का नाम केशव था और यही नाम इनके दादा जी (रामचन्द्र पंत) के पिता का भी था इसलिये परिवार में सब इन्हें बलवंत या बाल कहते थे, अत: इनका नाम बाल गंगाधर पड़ा। इनका बाल्यकाल रत्नागिरि में व्यतीत हुआ। बचपन में इन्हें कहानी सुनने का बहुत शौक था इसलिये जब भी समय मिलता ये अपने दादाजी के पास चले जाते और उनसे कहानी सुनते। दादाजी इन्हें रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, गुरुनानक, नानक साहब आदि देशभक्तों और क्रांतिकारियों की कहानी सुनाते थे। तिलक बड़े ध्यान से उनकी कहानियों को सुनकर प्रेरणा लेते। इन्हें अपने दादाजी से ही बहुत छोटी सी उम्र में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की सीख मिली। इस तरह प्रारम्भ में ही इनके विचारों का रुख क्रांतिकारी हो गया और ये अंग्रेजों व अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे। तिलक का जन्म एक सुसंस्कृत, मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका परिवार चितापावन वंश से संबंधित था जो सभी धार्मिक नियमों और परंपराओं का कट्टरता से पालन करते थे। इनके पिता, गंगाधर रामचन्दन पंत रत्नागिरि में सहायक अध्यापक थे। इनके पिता अपने समय के लोकप्रिय शिक्षक थे। गंगाधर रामचन्दन पंत ने त्रिकोणमिति और व्याकरण पर अनेक पुस्तकें लिखी जो प्रकाशित भी हुई। इनकी माता, पार्वती बाई धार्मिक विचारों वाली महिला थी। इनके दादा जी स्वंय महाविद्वान थे। उन्होंने बाल को बचपन में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं और देशभक्ति की शिक्षा दी। अपने परिवार से बाल्यकाल में मिले संस्कारों की छाप तिलक के भावी जीवन में साफ दिखाई पड़ती हैं। तिलक के पिता ने घर पर ही इन्हें संस्कृत का अध्ययन कराया। जब बाल तीन साल के थे तब से ये प्रतिदिन संस्कृत का श्लोक याद करके एक पाई रिश्वत के रूप में लेते थे। पांच वर्ष के होने तक इन्होंने बहुत कुछ सीख लिया था।

कारगिल विजय दिवस

26 जुलाई पर विशेष

कारगिल विजय दिवस स्वतंत्र भारत के लिये एक महत्वपूर्ण दिवस है। इसे हर साल 26 जुलाई को मनाया जाता है। कारगिल युद्ध लगभग 60 दिनों तक चला और 26 जुलाई को उसका अंत हुआ। इसमें भारत की विजय हुई। इस दिन कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के सम्मान हेतु मनाया जाता है।

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद भी कई सैन्य संघर्ष होता रहा। दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण के कारण तनाव और बढ़ गया था। स्थिति को शांत करने के लिए दोनों देशों ने फरवरी 1999 में लाहौर में घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। जिसमें कश्मीर मुद्दे को द्विपक्षीय वार्ता द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का वादा किया गया था। लेकिन पाकिस्तान ने अपने सैनिकों और अर्ध-सैनिक बलों को छिपाकर नियंत्रण रेखा के पार भेजने लगा और इस घुसपैठ का नाम 'ऑपरेशन बद्र' रखा था। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर और लद्दाख के बीच की कड़ी को तोड़ना और भारतीय सेना को सियाचिन ग्लेशियर से हटाना था। पाकिस्तान यह भी मानता है कि इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार के तनाव से कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाने में मदद मिलेगी।

प्रारम्भ में इसे घुसपैठ मान लिया था और दावा किया गया कि इन्हें कुछ ही दिनों में बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन नियंत्रण रेखा में खोज के बाद और इन घुसपैठियों के नियोजित रणनीति में अंतर का पता चलने के बाद भारतीय सेना को अहसास हो गया कि हमले की योजना बहुत बड़े पैमाने पर किया गया है। इसके बाद भारत सरकार ने ऑपरेशन विजय नाम से 2,00,000 सैनिकों को भेजा। यह युद्ध आधिकारिक रूप से 26 जुलाई 1999 को समाप्त हुआ। इस युद्ध के दौरान 527 सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया।

सभी देशवासियों को 'कारगिल विजय दिवस' की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ अमर शहीदों के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !!

जरा याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आये.....!!!!

26 जुलाई 1999 का दिन भारत वर्ष के लिए एक ऐसा गौरव लेकर आया, जब हमने सम्पूर्ण विश्व के सामने अपनी विजय का बिगुल बजाया था। इस दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में '26 जुलाई' अब हर वर्ष 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

दिल में हौसलों का तेज और, तूफ़ान लिए फिरते हैं।
आसमां से ऊंची हम अपनी, उड़ान लिए फिरते हैं।।

वक्त क्या आजमाएगा, हमारे जोश और जूनून को।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

हमसे महफ़ूज़ सरहदे है, हमसे रोशन ये चमन।
हमसे खुशियों कि बारातें, और कायम चैनों अमन।।

हम वतन के पहरेदार... दुश्मनों के लिए दीवार ....
सर पे कफ़न होंठों पे भवानी, नाम लिए फिरते है।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

हमारी वतन परस्ती, चंद रुपयों की मोहताज नहीं।
खरीद सके जो ईमान को, कोई ऐसा तख्तों ताज नहीं।।
हम भारत मां के वीर सपूत... सैन्य शक्ति के अग्रदूत....
अपनी बन्दूखों में दुश्मनों का, अंजाम लिए फिरते है।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

मात देते अपने साहस से, दुश्मन की हरेक चाल को।
तिलक करते अपने लहू से, भारत मां के भाल को।।

है अदम्य साहस का प्रकाश...नहीं किसी तमगे की आस,
अपनी शहादत पर भी सैकडों, सलाम लिए फिरते हैं।
हम तो मुट्ठी में अपनी, जान लिए फिरते हैं।।

सफलता का मूलमंत्र : सोच में सकारात्मक परिवर्तन

सीताराम गुप्ता

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है अतः वह अपने विवेक द्वारा अच्छे या बुरे विचारों का चुनाव कर सकता है। विचार के चुनाव के उपरांत उस विचार को एक सोते-जागते, उठते-बैठते उसी का सपना देखें। मन में उस विचार को दृढ़तर कर लें, बीज की तरह बो दें। अतः सोच द्वारा कर्म तथा कर्म द्वारा सोच अपने जीवन को अपेक्षित दिशा देना मन का ही कार्य है

प्रसिद्ध उर्दू शायर शुआज खावर का एक शेर है-

थोड़ा-सा बदल जाए तो बस ताज हो और तख्त, इस दिल का मगर क्या करें सुनता नहीं कमबख्त।

जी हां, 'मन' कविता अथवा शायरी की भाषा में जिसे दिल कहा गया है, यदि थोड़ा सा बदल जाए तो सचमुच कमाल हो जाए। लेकिन ये मन है कि सुनता ही नहीं। इसका क्या करें? ये मन ही है जो हमें अपने अनुसार चलाता है लेकिन यदि हम मन को अपने अनुसार चला सकें, इसे अपनी बात सुना सकें, थोड़ा बदल सकें तो यही मन हमें जीवन के हर क्षेत्र में अपार सफलता और अपार खुशी दिला सकता है।

कालिदास कहते हैं, 'नास्त्यगतिर्मनोरथानां' अर्थात् मन की इच्छा के समक्ष कुछ भी अगम्य नहीं है। मन को बदलना, मन पर नियंत्रण कर इसको अपेक्षित दिशा में ले जाना, थोड़ा कठिन जरूरी है, असंभव नहीं। एक बार इस मन को अपने नियंत्रण में ले लिया, इसकी चंचलता पर काबू पा लिया तो जीवन में कुछ भी करना असंभव नहीं रह जाएगा। कहा गया है 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत।' वास्तव में जीवन में हम न तो हारते हैं और न ही असफल होते हैं अपितु ये हमारा मन है जो हमारी हार-जीत अथवा सफलता-असफलता के लिए उत्तरदायी है क्योंकि ये मन की विभिन्न स्थितियां हैं।

एक बच्चा परीक्षा में चालीस प्रतिशत अंक लेकर पास हुआ और खुश है लेकिन दूसरे बच्चे के अस्सी प्रतिशत अंक आने पर दु:खी है। यहां सफलता अथवा खुशी अंकों के आधार पर नहीं अपितु मन की स्थिति पर निर्भर है। हार-जीत ही क्या, किसी भी प्रकार का सुख-दु:ख, लाभ-हानि, स्वास्थ्य अथवा आरोग्य सब मन की स्थिति पर निर्भर करता है। मन की स्थिति को परिवर्तित करके न केवल वर्तमान स्थिति में परिवर्तन संभव है अपितु नई लाभप्रद स्थितियों का निर्माण भी संभव है।

मन का क्या है इसका प्रभाव कैसे पड़ता है? हमारे शरीर को कई प्रकार के कई भागों, कई परतों अथवा कोषों में विभाजित किया जाता है लेकिन यहां मोटे तौर पर हम शरीर के तीन भागों का विश्लेषण करेंगे। एक है हमारा स्थूल शरीर अथवा भौतिक शरीर (फिजिकल बॉडी), दूसरा है कारण शरीर अथवा मानसिक शरीर अर्थात् 'मन' (मेंटल बॉडी अर्थात् माइंड) और तीसरा है सूक्ष्म शरीर अथवा आध्यात्मिक शरीर या 'चेतना' (स्पिरिच्युअल बॉडी अथवा कांशियसनेस या सोल)। कारण शरीर अथवा मन हमारे हाड़-मांस द्वारा निर्मित भौतिक शरीर और हमारी चेतना के मध्य सेतु का काम करता है, हमारे स्थूल शरीर को हमारी चेतना से जोड़ता है और हमारी चेतना तमाम संभावनाओं को विपुल क्षेत्र। मन की शक्ति द्वारा जब हम इस अपरिमित ऊर्जा के स्रोत से जुड़ जाते हैं तो जीवन में कुछ भी कर गुजरना या पा लेना असंभव नहीं रहता। मन में इच्छा उत्पन्न होने की देर है पूरा होने में नहीं। भौतिक शरीर में वांछित सकारात्मक परिवर्तन के साथ-साथ सम्पूर्ण भौतिक जगत में किसी भी वस्तु की प्राप्ति सुलभ है, मन की शक्ति के द्वारा। मन की शक्ति अर्थात् मन की एकाग्रता के द्वारा। मन को केवल एक स्थान, एक स्थिति या एक बिन्दु पर केंद्रित करके। लेकिन मन तो बड़ा चंचल है इसमें परस्पर विचारों का ताना-बाना चलता ही रहता है फिर एक विचार पर कैसे केंद्रित करें वो भी उपयोगी विचार पर।

मन में उठने वाले विचारों को हम दो भागों में बांट सकते हैं- सकारात्मक विचार तथा नकारात्मक विचार। हमारे दोनों प्रकार के विचारों का कारण है हमारा परिवेश, हमारे संस्कार तथा हमारी शिक्षा-दीक्षा। इन्हीं तत्वों से हमारे विचारों की उत्पत्ति प्रभावित होती है। समय के अनुसार भी इनमें परिवर्तन होता रहता है। क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है अत: वह अपने विवेक द्वारा अच्छे या बुरे विचारों का चुनाव कर सकता है।

विचार के चुनाव के उपरांत उस विचार को एक सोते-जागते, उठते-बैठते उसी का सपना देखें। मन में उस विचार को दृढ़तर कर लें, बीज की तरह बो दें। अत: सोच द्वारा कर्म तथा कर्म द्वारा सोच अपने जीवन को अपेक्षित दिशा देना मन का ही कार्य है। OO

- **पारस मणि पत्थर सुना जाता है, वह बात झूठी है। परंतु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारस मणि है कि जिसको लोह रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।**
- **कलियुग नाम काल है, काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म के काज में साधक बाधक नहीं। - *सत्यार्थ प्रकाश***

The Universal Arya Samaj

Om Arya

The Universal Arya Samaj (Vishwa Arya Samaj) is the universal community of good people. It is not limited to a particular time or place. It spans the entire universe and counts as its members all the noble souls who hail from the Solar Dynasty. The Solar Dynasty is comprised of millions and millions of inhabited planetary systems that revolve around one or more Suns. The various planetary systems are grouped together into galaxies, which in turn are revolving around the center of the Cosmos, Hiranyagarbha. (Our planet Earth is just one small outpost in the Solar Dynasty.)

In any large and expansive community there are bound to be renegade members. Those individual souls who have lost their humanity (their essential characteristic of compassion-mercy-forgiveness), and have engaged themselves in selfish, ignoble activities and self-centered pursuits, become degenerates. They are known as un-Aryas. Even though they may be intellectually endowed or influentially powerful, they live in a darkened state of mind and are out of touch with Reality. The one who is caught up in ego is eventually undone by his own mind. Anyone who betrays his conscience eventually falls apart, because without the cohesive force of conciousness one cannot last for long.

A noble soul (Arya) is one who goes beyond himself. The Arya goes beyond the limitations imposed by mind and ego. A good human being listens to the advice of the Wise and takes it to heart. A foolish person hears the advice but does not listen to it, because he is always listening to his ego. The Arya knows the ego is an impostor, and is therefore never impressed by egotistic people, or motivated by his own ego. On the other hand, an ignorant person (one who has little or no training and experience in the knowledge of the Self, the soul—ATMAN), is easily influenced by outer appearances and is victimized by his own misconceptions and false perception.

An Arya stays away from bad habits like drinking alcohol, smoking, eating meat, and engaging in promiscuous behavior. But the one who is an un-Arya compromises with his principles and loses his character. The constitution of the Vishwa Arya Samaj is written in the conscience of every soul. The articles of that constitution are the universal principles of good will. Those who harbor selfish motives violate their own true nature and feel insecure. To regain the sense of well-being, it is necessary to surrender our ego on the alter of consciousness. That is, we must give up our false identity to free ourselves from the sense of isolation and desperation.

Giving up our individuality does not mean we become nothing. It means that in order to experience our essence we have to stop holding on to our images, our arrogance, and our bias. Each and every soul is unique and universal, not individual. When we come in touch with that uniqueness we realize that we are not just a person—we are much more than that—each of us is a unique soul that is without beginning or end. We have always existed and will always exist—the soul is immortal. We can only experience this when we remove the mask of personality which is nothing but a temporary phenomenon of the mind.

The Arya is a man or woman of character and nobility. The Arya is not caught up in the shallow interplay of personality. The consciousness of the Arya is absorbed in the wisdom of the Absolute, in the Essence of Creation. The Arya does not pander for attention and recognition because he is living in the embrace of that Supreme Vibration. OO

ईश्वर की प्राप्ति

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनाऽऽत्मानमभि सं विवेश।।

संतोष भारद्वाज

वह परमात्मा समस्त प्राणियों, लोकों, दिशाओं और उपदिशाओं को भलीभांति लांघकर विद्यमान है। ऋत की पूर्वोत्पन्ना प्रकृति को ही अधिष्ठित होकर वह परमात्मा स्वयं में ही स्वयं सम्यक् प्रविष्ट हो रहा है।

कैसे प्राप्त करें ईश्वर को, जिसने रचा अद्भुत संसार। हार गए सब महिमा गाकर, पाया किसी ने नहीं पार।।

उस संसार निर्माता को प्राप्त करने के अभिप्राय से योगी योग का साध बताते हैं, तपस्वी तप का महत्व बताते हैं। ज्ञानी ज्ञान की पराकाष्ठा को उत्तम बताते हैं। याज्ञिक यज्ञ को ही सर्वोत्तम बताते हैं। भक्त भक्ति में ही उसके दर्शन करते हैं। रास्ता कोई भी हो, लक्ष्य सबका एक ही है, ईश्वर प्राप्ति। इन सब रास्तों को अपनाने से पहले तो मन सवांरना पड़ेगा। यह तो कहीं स्थिर रहता ही नहीं, भागता फिरता है। अशांत मन से तो प्रभु को पाया नहीं जा सकता।

यज्ञ शुरू किया और कब समाप्त हुआ, पता ही नहीं लगता, क्योंकि मन तो सैर करने गया हुआ था। वेद पढ़ों, गीता, रामायण या कोई और शास्त्र पढ़ो, पृष्ठ पर पृष्ठ उलटते जाइए, कुछ नहीं समझ आता। क्यों? मन तो वहां था ही नहीं। कभी-कभी अवसाद, अज्ञान, अस्वस्थता के कारण भी मन नहीं टिकता। मन को स्थिर रखने के लिए विद्वानों ने बहुत साधन बताए हैं, जैसे 'ओ३म्' का उच्चारण, ध्यान द्वारा मन को संयमित करने का अभ्यास आदि।

उपर्युक्त मंत्र में क्रम पूर्वक आगे बढ़ते हुए ईश्वर को समझने का मार्ग दर्शाया गया है। सर्वप्रथम परीत्य भूतानि, समस्त प्राणियों को जानकर आगे बढ़ने की बात कहीं गई है। समाज में हमको जिनके साथ व्यवहार करना है, रहना है, उनको अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। उनके स्वभाव, रुचि, आचरण, रहन-सहन, मनोदशा को जानने का प्रयास करना चाहिए। यह है एक मनोवैज्ञानिक ढंग। इस विधि को अपनाने से निश्चिय ही हमारा मन शांत रहेगा। सुखी रहेगा और समाज में शांति बनी रहेगी। आगे कहा, परीत्य लेकान्, लोकों को भली भांति समझकर आगे बढ़ें। तीन लोक हैं- पृथ्वीलोक, अंतरिक्षलोक और द्युलोक। नाभि से नीचे का शरीर का भाग पृथ्वी लोक या भोगलोक कहलाता है। अत: उस पर संयम रखते हुए स्वास्थ्य लाभ करें। नाभि से ऊपर कंठ तक का भाग अंतरिक्ष लोक है, जहां हमारा कोमल हृदय रहता है, जो भावमय लोक है। सबसे सुंदर, सबसे नाजुक यह लोक है। प्रभु भी तो भाव के भूखे हैं जो इस लोक में भक्त के भाव से बांधे जाते हैं। भावनापूर्ण प्रार्थना ही प्रभु प्राप्ति का प्रमुख व श्रेष्ठ साधन है। किसी कवि ने कहा है, 'जो भरा नहीं है भावों से, वह हृदय नहीं, वह पत्थर है।' अत: एक उत्तम मनुष्य बनने के लिए हमारे हृदय के भावों की पवित्रता निश्छलता होनी परम आवश्यक है।

कंठ से सिर तक द्युलोक है। यह शरीर का मुख्य स्थान है। इसी में मस्तिष्क का निवास है, मस्तिष्क में बुद्धि का निवास है जो विचारों की जननी कहलाती है। उच्च, पवित्र, उदात्त विचार मनुष्य को ऊंचाइयों तक ले जाते हैं। निकृष्ट विचार पतन के गर्त में डुबो देते हैं। 'तीन लोकों को जानना' इस कथन का सार यह है कि शरीर स्वस्थ हो, भाव शुद्ध हो और बुद्धि पवित्र हो तो ईश्वर प्राप्ति का मार्ग कुछ सहज हो सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है और उस मस्तिष्क के उत्तम क्रियान्वयन से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सता है।

प्रस्तुत मंत्र में आगे कहता है, परीत्य सर्वा: प्रदिश: दिश: च समस्त दिशा और उपदिशाओं को जानकर आगे बढ़ें। यह कड़ी हमें देश-विदेश के पर्यटन की ओर ले जा रही है। ज्ञान अर्जित करने के लिए पर्यटन महत्वपूर्ण है। विविध स्थानों का पर्यटन करने से उन प्रदेशों के रहन-सहन, भाषा-विचार, समस्याओं, स्वभावगत बातों का सूक्ष्म निरीक्षण होता है, इनसे हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। राजस्थान के वृष्टिहीन इलाकों में कैसे लोग वर्षा का जल इकट्ठा करने पीने के लिए रखते हैं, पूर्वी प्रदेशों में कैसे सुबह चार बजे ही सूर्य के दर्शन हो जाते हैं, बड़ा ही यह अद्भुत दृश्य होता है। इस भ्रमण में परमात्मा की रचना का कितना मनोरम दृश्य आंखों के सामने आता है और सृष्टि की रचना का कितना महत्व महसूस होने लगता है, इसे केवल एक पर्यटक ही अनुभव कर सकता है। वैसे भी कहा गया है कि वृद्धों के लिए भजन, भोजन और भ्रमण तीनों ही महत्वपूर्ण हैं और आवश्यक भी, वरना मनुष्य कूपमंडूक बनकर रह जाता है।

इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि हम दिशाओं के अधिपति अग्नि देव है। उससे हमें आगे बढ़ने की, ऊंचे चढ़ने की, तेज से अपने अनुभव-स्वाध्याय रूपी तेजस्विता प्राप्त करने की, प्रकाश से प्रकाश फैलाने को प्रेरणा प्राप्त हो। दक्षिण दिशा का अधिपति यम है, उससे संयम के जीवन जीने की कला सीखें। जीवन को संयमित कर ज्ञानार्जन करें।

➲➲

जीवात्मा का अनादित्व एवं मोक्ष प्राप्त करना

मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर, जीव तथा प्रकृति अनादि, नित्य, अविनाशी, अजर व अमर हैं। जीवात्मा ईश्वर से कर्मानुसार जन्म मरण प्राप्त कर कर्म-फलों को भोगता है। मनुष्य योनि उभय योनि है जिसमें मनुष्य पूर्व किये हुए कर्मों के फलों को भोगता भी है और नये कर्मों को करता भी है। मनुष्य जीवन में यदि मनुष्य वेदानुसार जीवन व्यतीत करते हुए समाधि अवस्था को प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है तो इससे वह मोक्ष का पात्र बन जाता है।

ईश्वर साक्षात्कार के बाद वह अनेक बार समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार करता रहता है। प्रथम ईश्वर साक्षात्कार से आरम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त वह जीवन मुक्त अवस्था में रहता है। मृत्यु होने पर उस जीवात्मा का मोक्ष होता है। यह मुक्ति अनेक जन्मों में किये हुए शुभ कर्मों का परिणाम होती है। मोक्ष में जाने के बाद अवधि पूरी होने पर उस जीवात्मा का मनुष्य योनि में पुनर्जन्म होता है। वह फिर नये सिरे से कर्म करना आरम्भ करता है और सम्भव है कि उसे पुनः मोक्ष मिल जाये व अनेक जन्म लेने के बाद उसका पुनः मोक्ष हो सकता है। ऐसा वैदिक साहित्य को पढ़ने से विदित होता है। संसार में जितनी भी प्राणी योनियां हैं उनमें सभी प्राणियों मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट व पतंग आदि में एक ही समान प्रकार का जीवात्मा है जो कर्मानुसार कभी मनुष्य तो कभी अन्य योनियों में जन्म लेते हैं।

यह कर्म अनादि काल से चलता आ रहा है। हम सब भी अनादि काल से कर्मानुसार अनेक वा सभी योनियों में जन्म लेते आ रहे हैं। अनुमान से कह सकते हैं कि प्रायः हमारे सभी योनियों में अनेक अनेक बार जन्म हुए हैं। अनेक

बार हम सांप, बिच्छू, सिंह व विषैले जीव वा प्राणी भी बने हैं। अनेक बार हमारा व सबका मोक्ष भी हुआ है।

अतिश्योक्ति न होगी यदि यह भी कहें कि अनन्त अनन्त बार हमारे सभी प्राणी-योनियों में जन्म हुए हैं और अनन्त बार हमारा मोक्ष भी हुआ है। हम सभी मनुष्यों को इस पर विचार करना चाहिये और मोक्ष प्राप्ति के लिए किये जाने वाले कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिये। मुमुक्षुओं के लिए किये जाने वाले कर्मों का उल्लेख सत्यार्थप्रकाश व दर्शन आदि ग्रन्थों में मिलता है। इन ग्रन्थों का अध्ययन कर ज्ञान लाभ करना चाहिये जिससे हमारी आत्मा की उन्नति हो। मोक्ष संसार में सब सुखों से बढ़कर है। ऐसा शास्त्र व हमारे ऋषि मुनि कहते आये हैं और इसकी प्राप्ति के लिए भीषण तप व पुरुषार्थ भी करते आये हैं।

हम अपने इस मनुष्य जीवन में भी तो सुख की इच्छा करके साध्य सुखों के अनुरूप साधनों का प्रयोग कर उन सुखों को प्राप्त करते ही हैं। मनुष्य जीवन में हम जिन सुखों को सुख मान कर उनको प्राप्त करने के लिए सारा जीवन लगा देते हैं, उनमें से कुछ लोगों को कुछ सुख ही प्राप्त होते हैं और कईयों को अनेक सुख जिनकी उन्होंने इच्छा की हुई होती है, प्राप्त नहीं होते। कई लोग तो सुखों की प्राप्ति के लिए रात्रि दिन धनोपार्जन में ही अपना सारा समय गवां बैठते हैं। अपने इस जीवन की उन्नति व परलोक के सुधार पर उनका ध्यान जाता ही नहीं है। ऐसे सांसारिक लोग धनोपार्जन आदि में अत्यधिक पुरुषार्थ करते हुए कम आयु में ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। हमारे कुछ मित्रों के साथ भी ऐसी घटनायें हुई हैं। उनका उपार्जित किया हुआ धन उनके परिवारजनों के काम तो आता है परन्तु जिसने अच्छे व बुरे कर्मों से धन उपार्जित किया, वह व्यक्ति उस धन से प्राप्त हो सकने वाले सुखों से वंचित ही रहे और संसार से चले गये। पता नहीं की उनका परलोक बना या बिगड़ा? यह जीवन तो उस धन से सुख भोगने से पहले ही समाप्त हो गया।

बुद्धिमान मनुष्य वही है जो अपने से अधिक बुद्धिमान व विवेकशील मनुष्यों की बातों को माने व उनका आचरण करे। सृष्टि के आरम्भ से आज तक ऋषियों व वेद के विद्वानों से अधिक बुद्धिमान व विवेकशील मनुष्य उत्पन्न नहीं हुए हैं। वह सब मनुष्यों को मुमुक्ष बनने की प्रेरणा करते रहे हैं। स्वयं के जीवन से भी वह इसका उदाहरण प्रस्तुत करते रहे हैं। स्वामी दयानन्द जी का जीवन हमारे सम्मुख है। हमें उनके जीवन से शिक्षा लेकर उनके अनुसार ही आचरण करना चाहिये। इसी में हमारा कल्याण व हित है। मोक्ष के विषय में अधिक जानकारी के लिए हमारा निवेदन है कि पाठक सत्यार्थप्रकाश का नवम् समुल्लास व ऋषि के अन्य ग्रन्थों सहित सांख्यदर्शन व उपनिषदों आदि का अध्ययन करें। इससे उनके आध्यात्मिक ज्ञान में उन्नति होगी व आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा मिलेगी। ○○

दयानन्द को श्रद्धा सुमन

देखी दया ऋषि की तो फूट-फूट रोया पापी
बोल उठा हाय प्रभु मैं तो हत भागी हूं
हाय ऋषिघात जैसा पाप किया आज मैंने
कैसे पश्चाताप करूं महा अधभागी हूं
मिलेगा ना चैन मुझे रहूंगा बेचैन सदा
मरूंगा ना जिऊंगा मैं प्रभु महा दागी हूं
कांपती है दशों दिश 'दुष्ट तुझे धिक धिक
सच्चा ऋषि मारा तूने 'अति पाप पापी हूं।
मृत्यु में भी जगत को दया का पढ़ा के पाठ
वेद मन्त्र बोलकर चल दिये दयानन्द
दीपक जलाया आत्म-मान का था नारियों में
शिक्षा को सभी के द्वार बिठा गये दयानन्द
उल्टे-सीधे अंट संट अर्थ के अनर्थ थे जो
सत्य अर्थ उनके भी बता गये दयानन्द
खंडित पाखंड किया वेदों को ही मान दिया
सत्यार्थ प्रकाश भी तो दिखा गये दयानन्द॥

➲ श्री भगवान दीक्षित

तुम और मैं

पुष्प 'तुम' उपवन का सुरभित, 'मैं' निरर्थक शूल हूं।
'तुम' गले का हार हो, मसला गया 'मैं' फूल हूं॥

तारिका आकाश की चन्दा की ज्यों बारात हो,
चांदनी पूनम की 'तुम' 'मैं' ज्यों अन्धेरी रात हो,
तुम लहर सागर की उत्फुल, मौन 'मैं' इक कूल हूं।
'तुम' गले का हार हो, मसला गया 'मैं' फूल हूं॥

'तुम' घटा सावन की हो, सूखा मरुस्थल तप्त 'मैं',
दैव का वरदान 'तुम' हो, श्राप से अभिशप्त 'मैं'
'तुम' प्रकृति की प्रेरणा, विधना की 'मैं' इक भूल हूं।
'तुम' गले का हार हो, मसला गया 'मैं' फूल हूं॥

'तुम' कवि की कल्पना और साधना की उमंग हो,
प्रेम की प्रतिमा हो 'तुम' और तूलिका सतरंग हो,
'तुम' कलश अमृत का पावन, 'मैं' हलाहल मूल हूं।
पुष्प 'तुम' उपवन का सुरभित, 'मैं' निरर्थक शूल हूं॥

➲ देवेन्द्र कुमार आर्य

देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी

देश धर्म की भेंट चढ़ा दी, अपनी भरी जवानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

राणा सांगा ने बाबर को, नाकों चने चबाए।
महाराणा प्रताप, शिवाजी, मुगलों से टकराए॥

तेग बहादुर, गोविन्द सिंह ने, दुष्टों को मुंह मारा।
बंदा वैरागी, नलवा को, मान गया जग सारा॥

दुर्गा रानी, किरण मई थीं, देश भक्त क्षत्राणी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

जगत गुरु ऋषि दयानन्द ने, सोया देश जगाया।
आजादी का बिगुल बजाया, योगी न घबराया॥

तात्या टोपे, तुकाराम, नाना को साथ लगाया।
वीर कुंवर सिंह, नाहर सिंह ने, भारी युद्ध मचाया॥

लक्ष्मी बाई अंग्रेजों से, खूब लड़ी मर्दानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

वीर सुभाष चंद्र ने था, गोरों का राज हिलाया।
भारत है वीरों की धरती, दुष्टों को दिखलाया॥

बिस्मिल, शेख, भगत सिंह ने, भारी लड़ी लड़ाई।
खुदीराम, अशफाक वीर ने, हंसकर फांसी खाई॥

मत भूलो, लंदन में उधम की पिस्तौल चलानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

वीरों के बलिदानों से ही यह आजादी आई।
भारत वीर सपूतों ने थी, कठिन मुसीबत पाई॥

आजादी का महत्व समझाओ, सभी बहिन अरु भाई।
मिलजुल करके रहना सीखो, इसमें सभी भलाई॥

देश भक्त बलवान बनो तुम, सच्चे ईश्वर ध्यानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

बनो सदाचारी, तपधारी, जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
गंदी संगति त्यागो प्यारो, जग में आदर पाओ॥

वैदिक धर्मी बनो, देश भारत की शान बढ़ाओ।
'नंदलाल' तुम आजादी के, मधुर तराने गाओ॥

करो देश का ध्यान छोड़ दो करनी तुम मनमानी।
देशवासियों याद करो अब, वीरों की कुर्बानी॥

➲ पं. नन्दलाल 'निर्भय' पलवल

सृष्टि का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा

गंगाशरण आर्य

जैसे मकड़ी किसी बाहर के पदार्थ को न लेकर अपने अंदर विद्यमान पदार्थ से ही जाला बनाती है और उसके बाद उस जाले को अपने अंदर ही ले लेती है उसी प्रकार सर्वव्यापक परमात्मा अपने अंदर ही उसको प्रलय करके स्थित कर लेता है और जैसे पृथ्वी में बीज डालने पर अपना-अपना वृक्ष आता है वैसे ही परमात्मा की सत्ता में जीवों के अपने-अपने कर्म शरीरों का निर्माण करता है और जैसे शरीर के अंदर जीवात्मा के स्थित रहने पर काटे हुए नाखून या बाल स्वयं बढ़ जाते हैं। क्षत-घाव स्वयं भर जाता है परंतु यदि जीवात्मा शरीर से निकल जावे तो काटे बाल नहीं उगेंगे, काटे नख नहीं बढ़ेंगे और न घाव ही पूरा भरेगा। जैसे जीवात्मा की शरीर के अंदर सत्ता रहते हुए सब व्यापार होते रहते हैं वैसे ही समस्त ब्रह्माण्ड में महान सत्ता परमपिता परमात्मा के रहने से सृष्टि और प्रलय होते रहते हैं अतः वह चर-अचर सभी का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा ही है।

सृष्टि को देखने से उसमें सर्वत्र नियम पाया जाता है सूर्य चंद्र आदि की गतियां कितनी नियमपूर्वक हैं। प्राणियों के शरीर की रचना कितनी सुव्यवस्थित है। क्या यह सब कुछ किसी नियामक के बिना हो सकता है? यह रचना आदि का नियामक गुण ईश्वर को जतलाने वाले हैं उसकी सत्ता के प्रकाशक हैं। जब किसी वस्तु का साक्षात्कार करते हैं तब उसके गुणों को देखते हैं गुणों के देखने से गुणी का ही साक्षात्कार समझा जाता है।

जैसे जब हम किसी एक पुष्प को देखते हैं यह एक प्रश्न है उस समय हम उस पुष्प के रंग को देखते हैं आकार को देखते हैं इत्यादि ये सब गुण ही तो हैं इन गुणों को देखने से ही पुष्प का साक्षात्कार समझा जाता है अर्थात् रचना को देखकर रचनाकार का ज्ञान हो जाता है कि वह साकार है अथवा निराकार है वैसे ही हम प्रभु की रचना को देखकर ही प्रभु का ज्ञान करते हैं इसके अतिरिक्त जिस प्रकार सूर्य की किरणें संसार के समस्त पदार्थों का प्रकाश करती हैं वैसे ही किरण के समान वेद की ऋचाएं प्रभु को प्रकाशित करती हैं। नास्तिक लोग भी यदि सच्चाई के साथ हठ धर्मिता छोड़कर बुद्धिपूर्वक यदि विचार करें तो उन्हें ईश्वर का निश्चय हो जाएगा।

परमात्मा को जान लेने पर परमात्मा के साक्षात् हो जाने पर संसार का कोई परमाणु भी ऐसा नहीं होता जिसको योगी न जान लेता हो। इसी प्रकार के समाधिस्थ लोगों ने समस्त संसारिक विद्याओं के भी आविष्कार किये हैं अतः उनके आविष्कारों, अनुसंधानों, ज्ञानों में भ्रांति नहीं हो सकती।

अन्य लोग जो वर्तमान विज्ञान के आधार पर अनुसंधान करते हैं उनके सिद्धांत बदलते रहते हैं क्योंकि वर्तमान विज्ञान में यह बात निर्विवाद है कि उसके अंदर बहुत बड़ा भाग अनुमान का होता है। यंत्रों द्वारा प्रत्येक बात का साक्षात्कार नहीं होता। कुछ को यंत्र से जानते हैं शेष को अनुमान से। परंतु प्राचीन अनुसंधानकर्ता ऋषियों का सब कुछ साक्षात्कृत होता था अतः जितने को वह जानते थे निर्भ्रांत जानते थे- जिसको नहीं जानते थे उसको नहीं जानते थे क्योंकि जीव सर्वज्ञ कभी भी नहीं हो सकता।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 24 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221

सामूहिक यज्ञ का आयोजन और उसकी उपयोगिता

आर्य बीएस शर्मा
कौशाम्बी, गाजियाबाद

सामूहिक यज्ञ का आयोजन और उसकी उपयोगिता तथा उपलब्धियों, यज्ञ का आयोजन आर्यजन तो प्रायः प्रतिदिन करते ही हैं। कुछेक स्थानों पर आर्यसमाज द्वारा अथवा विद्वत पुरुषों द्वारा साप्ताहिक यज्ञ करने या कराने की व्यवस्था भी है

सामूहिक यज्ञ को आयोजकों द्वारा कम व्यय से अधिक प्राण वान एवं समग्र बनाया जा सकता है। यज्ञ के आयोजन के अवसर पर संबंधित व्यक्तियों के मन में उत्साह एवं उमंग अधिक तीव्रता से उभर कर आती है जब उनके समक्ष उसके लाभ एवं परिणामों की बात कही जाती है। परिणामस्वरूप बुद्धजीवियों के बीच बौद्धिक स्तर के तथा भावुकों के बीच श्रद्धा प्रधान प्रतिपादन अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं।

सामूहिक यज्ञ का आयोजन और उसकी उपयोगिता तथा उपलब्धियों, यज्ञ का आयोजन आर्यजन तो प्रायः प्रतिदिन करते ही हैं। कुछेक स्थानों पर आर्यसमाज द्वारा अथवा विद्वत पुरुषों द्वारा साप्ताहिक यज्ञ करने या कराने की व्यवस्था भी है। यहां हमारा अभिप्राय महिलाओं और पुरुषों दोनों से है। यज्ञ आयोजन के स्थल का वातावरण सौम्यता स्नेह, परस्पर प्रेम एवं श्रद्धा के आवरण से आच्छादित हो जाता है। ऐसा सुरम्य वातावरण वहां उपस्थित प्राणियों में तदनुरूप भाव, संचार, आस्था, विकास एवं अपनी पूर्ण निष्ठा के निर्वाह की क्षमता भरने का कार्य करता है। सभी उपस्थित व्यक्तियों के विचारों और सद्भावनाओं के एकीकरण संयोग से ही उसमें अलौकिक शक्ति आती है जिसके प्रभाव से श्रेष्ठ भावनाए तरंगित होने लगती है और उस समय उन्हें समुचित दिशा प्रेरणा देने से उनका लाभ सम्मिलित होने वालों को मिल जाता है।

जैसे समुद्र में ज्वार-भाटा आने पर जहाज उथले क्षेत्र को पार कर जाते हैं और रत्न गहराइयों से उथले क्षेत्र में आ जाते है। ठीक इसी प्रकार मानवीय अंत:करण में भी श्रेष्ठ संकल्प बाधक प्रवृतियों को पार कर लेते है और अंदर के सुसंस्कार ऊपर आ जाते हैं। इस तरह वहां उत्पन्न ऊर्जा का लाभ जन जीवन को मिल जाता है। तभी तो यज्ञों के अनुष्ठान का लाभ जन साधारण तक पहुंचाने के लिए उन्हें प्रभावशाली प्राणवान बनाने के साथ साथ, सुगम और कम खर्चीला बनाने की कोशिश की जा रही है।

यज्ञ कर्म ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ है। यज्ञों वै श्रेष्ठतम कर्म। अत: इसको करना हमारा दैनिक नैतिक दायित्व है। यज्ञ, हवन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए- मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से अंगूठे के सहारे से सामग्री लेकर पूर्ण समर्पण भाव से पूरी अंजलि और अंगूठे से हवन कुंड में डाले। सभी आहुतियां ऐसे न डालें कि कुछ हवन कुंड में गिरे और कुछ कुंड के बाहर। आहुति डालते समय सभी एक साथ स्वाहा बोले।

यज्ञ में आहूत सामग्री अग्नि के दोहन के पश्चात सहस्त्रों गुणी गुणवत्तापूर्ण हो जाती है तथा जहां तक वायुमंडल में इसका प्रसारण होता है वहां-वहां सारा वातावरण पूर्णतया सुगंधित और स्वच्छ होने के साथ साथ स्वास्थ्य प्रद हो जाता है तभी तो वेद में यज्ञ को सर्व श्रेष्ठ कर्म की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

यज्ञ, हवन करते समय सभी सीधे होकर बैठें, कमर झुकी हुई न हो। सुख आसन में आलथी-पालथी लगा कर बैठे। सभी दत्त चित होकर यज्ञ प्रक्रिया में ध्यान लगाए। एक-दूसरे से बात न करें। ब्रह्मा, यज्ञ आचार्य के कहने पर ही बारी-बारी से हवन कुंड में आहुति डालें। पूर्ण आहुति देने के लिए सभी अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर आहुति ऐसे डालें कि सामग्री हवन कुंड में ही गिरे। बैठकर पुन: शांति पाठ एवं यज्ञ प्रार्थना तथा विभिन्न भजनों मे अपना सहयोग प्रदान करें।

अक्सर देखा गया है कि हम अधिकतर एक-दूसरे की निंदा करने या अन्य बेकार की बातों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं कि धार्मिक स्थलों पर मंत्रादि बोलने में अथवा भजनादि में सहयोग करने में बहुत संकोच करते हैं। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। आशा ही नहीं अपितु हमे विश्वास है कि हमारी युवा शक्ति अपना योगदान व्यर्थ की बातों को छोड़कर सकारात्मक सोच के साथ ऐसे कार्य में देंगे जिससे कि हमारा राष्ट्र अपनी संस्कृति को संजोए हुए विश्व गुरु बनने की दिशा में अपनी पताका फहराने में सफलता प्राप्त कर सके। OO

समाचार - सूचनाएं

- 6 से 12 जून सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, स्वामी इन्द्रदेव फाउंडेशन के तत्वावधान में कन्या चरित्र निर्माण शिविर एवं योग शिविर का आयोजन स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटोली, रोहतक में किया गया, जिसमें करीब 500 कन्याओं ने भाग लिया व राष्ट्रीय भावना, नैतिक शिक्षा, योगासन, जूडो-कराटे एवं आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। सभापति कु. पूनम आर्या व कु. प्रवेश आर्या के अथक परिश्रम से कार्यक्रम सफल रहा। स्वामी आर्यवेश जी द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया गया।
- केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 9 जून से आठ दिवसीय आवासीय युवकों का विशाल चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार में किया गया, जिसका समापन 17 जून को हुआ जिसमें अनेकों आर्य नेताओं, कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफलता प्रदान की।
- 10 जून को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद के संयुक्त तत्वावधान में मावलंकर आर्य हॉल में स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी की जन्म शताब्दी समारोह का भव्य आयोजन किया गया। अनेकों संस्थाओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

भावी कार्यक्रम : ■ अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में 6 से 8 जुलाई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान में भव्यता के साथ आयोजित किया जा रहा है। जिसमें सभी आर्य संस्थाओं, आर्ष गुरुकुलों, आर्य नेताओं, संन्यासियों, ब्रह्मचारियों, स्नातकों, विद्वानों, आर्यों से कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहयोग करने की अपील की गई है। आर्य समाज के इतिहास में पहली बार उपरोक्त आयोजन आयोजित किया जा रहा है। उद्घाटन योग गुरु स्वामी रामदेव जी के द्वारा 6 जुलाई सायं को होगा। महासम्मेलन में प्रस्ताव पारित कर सरकार से इन्हें क्रियान्वित करने के लिए प्रयास किया जाएगा।

१. प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति को वैकल्पिक शिक्षा पद्धति, २. केंद्रीय शिक्षा निदेशालय का गठन, ३. गुरुकुल शिक्षा पाठ्यक्रम में शिल्प विद्या, समान शिक्षा, नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का समावेश होना अनिवार्य। गुरुकुल एवं शिक्षा प्रणाली को सुरक्षित रखने के लिए सरकारों से आर्थिक रूप से मदद प्राप्त कर मजबूती प्रदान करना आदि।

- 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33 नोएडा में मनाया जायेगा। 26 जुलाई 1999 का दिन भारत वर्ष के लिए एक ऐसा गौरव लेकर आया, जब हमने सम्पूर्ण विश्व के सामने अपनी विजय का बिगुल बजाया था। इस दिन भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम देकर भारत भूमि को घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराया था। इसी की याद में '26 जुलाई' अब हर वर्ष 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। जरा याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आये.....!!!!

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।
आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद!
कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2018 को समाप्त हो गया है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।
चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221**

विश्ववारा संस्कृति

- सभी धार्मिक सामाजिक पत्रों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रकाशित होने वाली पत्रिका।
- वर्ष में 12 अंक प्राप्त करें।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का वार्षिक सदस्यता शुल्क 250 रुपया है। और आजीवन सदस्यता शुल्क 2500 रुपया है।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का विदेश में वार्षिक सदस्यता शुल्क 3100 रुपया है।
- लेखक अपने विचार, लेख, कविता आदि प्रकाशन सामग्री प्रत्येक मास की 2-4 तारीख तक भेज दिया करें।
- जिस मास से शुल्क भेजेंगे तभी से सदस्यता प्रारम्भ होगी।
- नमूना कॉपी के लिए रु. 20 का धन-आदेश द्वारा अग्रिम भेजें।
- प्रत्येक पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें और उत्तर चाहने वाले व्यक्ति दोहरा कार्ड या टिकट भेजें।
- प्रत्येक पत्र-व्यवहार में अपना पता भी हिन्दी में साफ-साफ लिखा करें।
- आपके सुझाव अपेक्षित हैं।

■ **प्रबंध संपादक**

'विश्ववारा संस्कृति' : सदस्यता आवेदन पत्र

नाम : ....

आयु : .... दिनांक : ....

पता : ....

....

शहर : .... राज्य : .... पिन कोड : ....

फोन : .... मोबाइल : .... ई-मेल ....

नगद/चैक/मनी आर्डर/डीडी संख्या : ....

संरक्षक/आजीवन/पंच वर्षीय/वार्षिक सदस्यता हेतु संलग्न है।

चैक-मनी आर्डर 'आर्य समाज' नोएडा के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया' नोएडा, सेक्टर-33 में खाता संख्या : 1483010100282, IFSC-UTB10SCN560 में जमा कराकर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें-

प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221

ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com

सुस्वास्थ्य

शुगर कंट्रोल करती है

आम की पत्तियां

- इसमें मौजूद 'हाइपोग्लाइसेमिक' प्रभाव से ब्लड शुगर लो हो जाता है
- इसमें काफी मात्रा में विटामिन 'सी', 'बी' और 'ए' भी पाया जाता है

ब्लड़ प्रेशर : इसमें हाइपोटेंसिव मेडिसिन होती है जिसके चलते यह ब्लड प्रेशर को लो करने में सहायक होती है।

पेट के लिए रामबाण : थोड़ी सी आम की पत्तियों को गरम पानी में डालें, बर्तन को ढंक दें और रातभर के लिए इसे ऐसे ही छोड़ दें। दूसरे दिन पानी को छान कर खाली पेट पी जाएं। इसे नियमित पीने से पेट की सारी गंदगी बाहर निकल जाती है और पेट के रोग दूर हो जाते हैं। इससे आपकी शुगर भी ठीक रहती है।

रोज आम की पत्तियों के पॉवडर का घोल पीने से किडनी का स्टोन दूर करने में मदद मिलती है

जिस तरह आम खाने में काफी स्वादिष्ट इसका मैंगोशेक पीना अच्छा लगता है उसी तरह आम की पत्तियों का रस या इन पत्तियों को उबाल कर पीने से आपकी कई बीमारियां दूर हो सकती हैं। आम की पत्तियों में 'थेराप्यूटिक' और अन्य मेडिकल मेडिसिन होती हैं। इसमें काफी मात्रा में विटामिन 'सी', 'बी' और 'ए' भी पाया जाता है। आप आम की छोटी, नाजुक पत्तियों को तोड़ कर मुंह में डाल कर चबा भी सकते हैं। इसका जूस बनाने के लिए पत्तियों को तोड़ कर हल्के गुनगुने पानी में डाल कर बर्तन को ढंक दें और सुबह पानी छान कर पी जाएं। इसका पॉवडर बनाने के लिए, नरम पत्तियों को तोड़ कर धो कर छाव में सुखा लें और फिर सूखने के बाद इसका पॉवडर बना कर सेवन करें। जब आम की पत्तियां ताजी, छोटी और लाल तथा बैंगनी रंग लिए हुए हो, तभी उन्हें तोड़ कर प्रयोग किया जाना चाहिए। बड़ी और पुरानी होने पर यह अपना असर नहीं दिखा पातीं। आम की पत्तियां कही से भी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें मौजूद 'एंटीऑक्सीडेंट' और 'एंटीमाइक्रोबियल' मेडिसिन जैसी चीजें होने के नाते यह लगभग हर बीमारी का खात्मा कर सकती हैं।

कौन-कौन सी बीमारी में है फायदेमंद

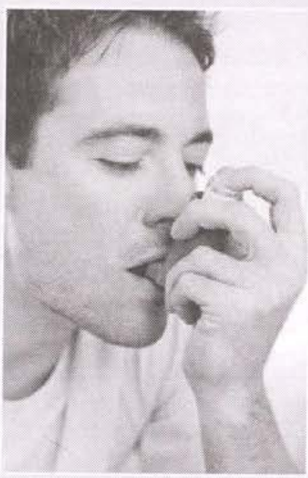

दमा से बचाए : यह सांस की बीमारी को भी कंट्रोल करती है। यह चाइनीज मेडिसिन में काफी ज्यादा प्रयोग की जाती हैं। आप आम की पत्तियों को पानी में उबाल कर बनाया गया काढ़ा पिएं। इसमें थोड़ा सा शहद भी मिक्स कर सकते हैं।

खून के थक्कों नहीं बनने देती : यह खून की नाड़ियों को मजबूती देती है और खून के थक्कों को जमने नहीं देती।

गॉल ब्लैडर व किडनी स्टोन : रोजाना आम की पत्तियों के पॉवडर से बना घोल पीने से किडनी के स्टोन दूर करने में मदद मिलती है। आम की पत्तियों को छाव में सुखा कर पॉवडर बना कर इसका सेवन करना चाहिए।

पेचिश का इलाज : यह खूनी पेचिश का भी इलाज करती है। आम की पत्तियों का पॉवडर दिन में दो बार पानी के साथ लें। इससे आराम मिलेगा।

> **आम की पत्तियों में 'थेराप्यूटिक' और अन्य मेडिकल मेडिसिन होती हैं। इसमें काफी मात्रा में विटामिन 'सी', 'बी' और 'ए' भी पाया जाता है। आप आम की छोटी, नाजुक पत्तियों को तोड़ कर मुंह में डाल कर चबा भी सकते हैं। इसका जूस बनाने के लिए पत्तियों को तोड़ कर हल्के गुनगुने पानी में डाल कर बर्तन को ढंक दें और सुबह पानी छान कर पी जाएं।**

कानों का दर्द दूर भगाए : इसकी पत्तियों का जूस निकाल कर हल्का गरम कर लें फिर इसको कानों में डालें, इससे दर्द दू हो जाएगा।

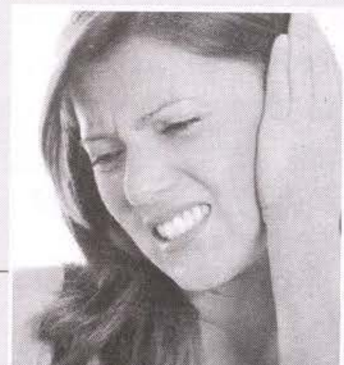

मधुमेह : इसकी नाजुक व ताजा पत्तियों की मदद से आप मधुमेह को भी कंट्रोल कर सकते हैं। यह ब्लड शुगर को कंट्रोल कर के आपके हेल्थ को ठीक रखती है। इसमें मौजूद 'हाइपोग्लाइसेमिक' प्रभाव से ब्लड शुगर लो हो जाता है।

संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

हों विचार समान सबके चित्त-मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा।।

विश्ववारा संस्कृति, आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33,
नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731

आर्यसमाज के दस नियम

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

ꕥꕥꕥꕥꕥꕥ

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221